04/04/25

क्रिया

वे शब्द जिनसे किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है। उन्हें क्रिया कहते हैं।

जैसे → पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, सोना, मरना आदि।

* क्रिया के भेद → कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

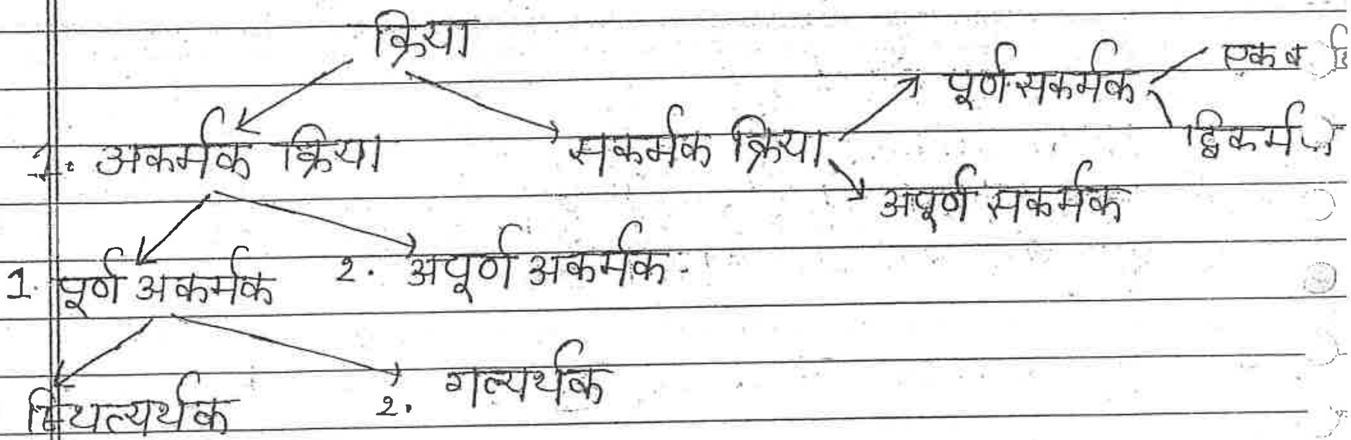

* अकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्ता के साथ होता है, या कर्म का अभाव होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

- शेर दहाड़ता है।
- बालक छत से गिरा
- गंगा हिमालय से निकलती है।
- पिताजी कमरे में सो रहे हैं।
- आकाश में तारे चमक रहे हैं।
- मछलियाँ पानी में तैर रही हैं।

05/04/25

→ भंवरे पुष्पों पर मंडरा रहे हैं।
→ तितलियाँ बाग में उड़ रही हैं।
→ घोड़े मैदान में दौड़ रहे हैं।

* अकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं।

(अ) पूर्ण अकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें किसी पूरक की आवश्यकता नहीं होती है, अर्थात पूरक के बिना ही वाक्य पूर्ण अर्थ प्रदान करता है, उसे पूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

• बालक सो रहा है।
• चिड़िया आकाश में उड़ रही है।
• लड़के मैदान में दौड़ रहे हैं।
• बूंद-बूंद से घड़ा भरता है।

* पूर्ण अकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं।

(1) स्थित्यर्थक पूर्ण अकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें क्रिया की स्थिति का बोध होता है, उसे स्थित्यर्थक पूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे ① शेर दहाड़ता है।
→ पिताजी कमरे में सो रहे हैं।
→ कमरे में मोमबत्ती जल रही है।
→ राधा हँसती है।

(2) गत्यर्थक पूर्ण अकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें क्रिया के होने की गति का बोध होता है, उसे गत्यर्थक पूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

05/04/25

जैसे → घोड़े मैदान में दौड़ रहे हैं।
→ चिड़िया आकाश में उड़ रही हैं।
→ मछलियाँ पानी में तैर रही हैं।
→ युवक टहल रहा है।

(2) अपूर्ण अकर्मक क्रिया → वे अकर्मक क्रियाएँ जिनको पूरक की आवश्यकता होती है, उन्हे अपूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

→ तुम बहुत चालाक निकले हैं।
→ राम आजकल स्वस्थ है।
→ मेरा दोस्त बहुत चालाक है।

सकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्ता के साथ न होकर कर्म के साथ होता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे → पहलवान दूध पीता है।
→ मोहन पुस्तक पढ़ता है।
→ राधा गाना गाती है।
→ रमेश पतंग उड़ाता है।
→ राम ने रावण को मारा।
→ सीता चाकू से सेब काटती है।
→ पंडित ने भक्तों को कथा सुनाई।
→ राजा ने गरीब को धन दिया।
→ मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया।
→ संगीता ने राधा को पुस्तक दी।
→ माता बच्चे को दूध ~~खिलाती~~ पीलाती है।

05/04/25

Note (i) कर्म एक कारक है। जिसका चिह्न 'को' होता है क्रिया से पहले आता है। दिखाई नहीं देता है। अर्थात वाक्य में क्रिया से पहले कोई भी चिह्न 'को' के अलावा दिखाई देता है. तो अकर्मक और दिखाई नहीं देता है, तो सकर्मक क्रिया का उदाहरण होता है।

Note (ii) प्राणी की स्वाभाविक क्रियाएँ (सोना, चलना, बैठना, हँसना, रोना, उड़ना, लजाना, घटना, बढ़ना, होना बरसना, अकड़ना, कूदना, जागना, डोलना, मरना, गिरना, बचना, उतरना, तड़पना, टूटना, लेटना, चढ़ना, लेटना, दौड़ना, भागना, भौंकना, चहचहाना आदि।

* अकर्मक तथा ऐच्छिक क्रियाएँ → पढ़ना, लिखना खाना, पीना, खेलना, सुनाना, बेचना, खरीदना, देखना, बनाना, पकड़ना, लाना, देना, पकाना, मारना, काटना, सिलना, आदि, **सकर्मक** होती हैं।

* सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं।

(अ) पूर्ण सकर्मक क्रिया → वे सकर्मक क्रियाएँ जो अपने अर्थ को स्वत: पूरी तरह व्यक्त करने में समर्थ हैं, उन्हें पूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं।

* इसके दो भेद होते ~~है~~ - हैं।

(1) एक कर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमे क्रिया का एक ही कर्म होता है, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।

05/04

Date ______
Page ______

जैसे → माली फूल तोड़ रहा है।
→ खिलाड़ी गेंद पकड़ता है।
→ लड़कियाँ नृत्य कर रही हैं।
→ छात्र निबंध लिख रहा है।
→ पहलवान दूध पीता है।

② द्विकर्मक क्रिया → वह वाक्य जिसमें क्रिया के दो कर्म होते हैं। उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

→ नानी ने बच्चों को खिलौने दिए।
→ अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाते हैं।
→ माँ बच्चों को दूध पिलाती है।
→ बहन भाई को राखी बाँधती है।
→ दादी बच्चों को कहानी सुनाती है।
→ तुम मुझे कोई कविता सुनाओ।
→ नौकर ने कुत्ते को दूध पिलाया।

* अपूर्ण सकर्मक क्रिया → वह सकर्मक क्रिया जिसमें कर्म होते हुए भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती है, उसे अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे → मुझे तो वह बहुत अनुभवी लगता है।
→ रमेश तुम्हें अपना भाई मानता है।

\# प्रयोग या रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं।

① सामान्य क्रिया
2. संयुक्त क्रिया
3. नामधातु क्रिया
4. प्रेरणार्थक क्रिया
5. पूर्व कालिका क्रिया

05/04/25

① सामान्य क्रिया → वह वाक्य जिसमें एक ही क्रिया का प्रयोग होता है, उसे सामान्य क्रिया कहते है।

जैसे → मोहन पुस्तक पढ़ता है।
↳ पहलवान दूध पीता है।
→ शिशुपाल टाईप करता है।

② संयुक्त क्रिया → वह वाक्य जिसमें दो या दो से अधिक क्रियाओं का प्रयोग एक साथ, उसे संयुक्त क्रिया कहते है।

→ पुलिस को देखकर चोर भाग गया
जहाज नदी में डूबता चला गया
→ अर्जुन क्रिकेट खेलना चाहता है

→ तुम अभी और चल सकते हो
→ सचिन अभि अभी और खेल सकता है।
→ मैंने पत्र लिख लिया था

③ नाम धातु क्रिया

→ संज्ञा सर्वनाम व विशेषण के योग से बनने वाले क्रिया पद नामधातु क्रिया कहलाते हैं।

* जमींदार ने किसान की जमीन हथिया ली।
↳ राधा बहुत बतियाती है।
→ बुढ़िया तो सठिया गई है।

J.B.B

Date ______
Page ______

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण → नामधातु क्रिया

अपना → अपनाना
लज्जा → लजाना
बात → बतियाना
हाथ → हथियाना
लात → लतियाना
शर्म → शर्माना
त्याग → त्यागना
झूठ → झूठलाना
टक्कर टकराना
फटकार फटकारना
धिक्कार → धिक्कारना
गर्म → गर्माना
नर्म → नर्माना

(4) प्रेरणार्थक क्रिया → वह वाक्य जिसमें कर्ता स्वयं कार्य न करके उसे किसी अन्य के माध्यम से करवाता है। उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे → मोहन ने माली से दूब कटवायी।
→ रमेश ने नाई से बाल कटवाये।
→ मोदी ने जनता से झाड़ू लगवायी
→ राम ने सीता से खाना बनवाया।
→ नरेश दर्जी से कपड़े सिलवाता है।

सामान्य क्रिया → प्रेरणार्थक क्रिया
दौड़ना → दौड़वाना
देना → दिलवाना
कहना → कहलवाना
पीना → पिलवाना

धोना → धुलवाना	काटना → कटवाना
लूटना → लुटवाना	फाड़ना → फड़वाना
भागना → भगवाना	बेचना → बिकवाना
पीसना → पिसवाना	सीना → सिलवाना
फूँकना → फूँकवाना	चीरना → चिरवाना
लिखना → लिखवाना	
पढ़ना → पढ़वाना	

(5) पूर्वकालिक क्रिया → मुख्य क्रिया से पहले जिस क्रिया का प्रयोग किया जाता है, उसे पूर्व कालिक क्रिया कहते है।

→ इसके अन्त में हमेशा "कर/पर" जुड़ा होता है।

जैसे → बालक रो-रोकर सो गया।
→ दिनेश दौड़ कर विद्यालय पहुँचा।
→ पुजारी नहाकर मंदिर गया।
→ अध्यापक के आने पर छात्र पढ़ने लगे।
→ पिताजी के कहने पर राम बाजार गया।
→ बच्चा दूध पीकर सो गया।

क्रिया।

कथन I: अकर्मक क्रियाओं का सीधा सम्बंध कर्ता से नहीं होता इसका फल स्वयं कर्ता पर पड़ने से दूर रहता है।
कथन II: सकर्मक क्रियाओं का फल कर्म पर पड़ता है, कर्म के बिना उनका अर्थ पूरा नहीं हो सकता।
→ कथन I असत्य है, किंतु कथन II सत्य है।

प्र॰2 रचना की दृष्टि से सामान्यतः क्रिया के भेद
→ दो [अकर्मक, सकर्मक]

प्र॰3 मिलान करो

सूची I (वाक्य)	सूची II। क्रिया
(A) राम रोटी खाता है।	→ सकर्मक क्रिया
B. वेदांत पढ़ता है	→ अकर्मक क्रिया
C. शिक्षक विद्यार्थी से किताब पढ़वाता है।	→ प्रेरणार्थक क्रिया
d वह लड़का चल बसा	→ संयुक्त क्रिया

प्र॰4 'सकर्मक' क्रिया युक्त वाक्य है?
(A) मैं घड़ा भरता हूँ। (b) उसका सिर खुजलाता है।
(C) जी घबराता है (d) वह लजा रही है।

प्र॰5 जब कर्ता स्वयं काम न कर किसी दूसरे व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो कौनसी क्रिया होगी?
→ प्रेरणार्थक क्रिया।

प्र॰6 (A) शिक्षक विद्यार्थी से पुस्तक पढ़वाते हैं → प्रेरणार्थक क्रिया
(B) सुकन्या पढ़कर सोती है → पूर्वकालिक क्रिया
(C) वह जाता है → अकर्मक क्रिया
(d) राजू ने मीना को पुस्तक दी → सकर्मक क्रिया

06/04/25

प्र०7 'चलना-चलाना' शब्द किस क्रिया का उदा० है?
→ यौगिक क्रिया ✓

प्र०8 राधा पढ़कर सोती है। इस वाक्य में 'पढ़कर' किस क्रिया का उदाहरण है?
→ पूर्वकालिक क्रिया।

प्र०9 अकर्मक क्रिया का वाक्य है?
(A) हेमलता हँसती है (b) माताजी कपड़े धो रही है
(C) वह श्याम से पत्र लिखवाता है (d) पूजा पूजा कर रही है। उ०प्र

प्र०10 किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है?
(a) वह रातभर नहीं सोया (b) कपिल आम खाता है। उ०प्र
(C) चेतन पानी पी रहा है (D) सरोज नाटक देख रही है।

प्र०11 असंगत विकल्प है?
(A) उसने सेब खाया — सकर्मक क्रिया ✓
(b) पुलिस ने चोर पकड़वाया → प्रेरणार्थक क्रिया ✓
(c) लड़के मैदान में दौड़ रहे हैं। अकर्मक क्रिया ✓
(d) माताजी प्रतिदिन मैदान में जाते हैं — सकर्मक क्रिया ✗ उ०प्र

(12) सजातीय क्रिया का प्रयोग हुआ है?
(A) मातृभूमि के लिए मरना श्रेष्ठ है।
(b) टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
(c) पुलिस ने चोर को बड़ी मार मारी
(d) सूखे पत्ते हवा में उड़ गए → प्रत [illegible]

प्र.13 अकर्मक क्रिया है? III ग्रेड 2023
(A) बच्चा रोता है।
(B) आप आज शाम को क्या कर रहे हैं?
(C) मोहन सितार बजा रहा है।
(d) पूजा कपड़े धो रही है।

06|05|25

Date
Page

ग्रे3 II 2022

(14) प्रेरणार्थक क्रिया के सम्बंध में कौनसा कथन गलत है
(A) अधिकतर धातुओं से दो-दो प्रकार की प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती है।
(B) मूल धातु के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार में कर्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
(C) सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक होती हैं।
(d) मूल धातु के अंत में 'आ' जोड़ने से पहली प्रेरणार्थक क्रिया और 'वा' जोड़ने से दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया बनती है।

PSI 2021

(15) सकर्मक क्रिया है?
(A) वह अभी तक सो रहा है (b) बच्चे बहुत देर तक से सो रहे हैं।
(C) धावक मैदान में दौड़ रहा है (d) वह पतंग उड़ा रहा है।

(16) अकर्मक क्रिया है? बनाए
(A) वह बिना बात ही हँस रही है। (B) बच्चों ने बहुत सुन्दर चि
(C) माँ पुत्र को समझाती है (d) मदारी भालू को नचाता है।

(17) 'मैंने लड़के को पुस्तक पढ़ाई'। क्रिया है?
(A) अकर्मक (B) संयुक्त (C) पूर्वकालिक (d) द्विकर्मक

(18) व्याकरण की दृष्टि से गलत कथन है?
(A) संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण हैं।
(B) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
(C) क्रिया के प्रमुख ② भेद हैं 1. सकर्मक 2. अकर्मक
(d) सर्वनाम व क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

(19) संयुक्त क्रिया का प्रयोग नहीं हुआ है?
(a) लुटेरों ने पूरे क्षेत्र को लूट लिया
(b) मैं नहाकर कार्यालय जाऊँगा।
(C) वह सारा खाना खा गया।

6/04/25

प्र०20 द्विकर्मक रूप में प्रयुक्त क्रिया है?
(A) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाया।
(B) वह सुबह पढ़ाई करता है और शाम को खेलता है।
(C) मैं बाजार से सब्जी और फल खरीद लाया।
(d) मदारी के करतब देखकर दर्शक खूब हँसे।

प्र०21 प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग किस वाक्य में है?
(A) उसने मेरे लिए सामान खरीदा
(B) हमें सदैव सत्य बोलना चाहिए।
(C) अध्यापक छात्र से कहानी लिखवाता है।
(d) तुम्हें देर तक नहीं सोना चाहिए।

प्र०22 सकर्मक क्रिया है?
(A) शोरगुल से बच्चा जाग गया।
(b) वह बहुत समय से सो रहा है।
(C) चीता तेज दौड़ता है।
(d) माँ बच्चे को सुलाती है।

प्र०23 कौनसा कथन सही नहीं है?
(A) प्रेरणार्थक क्रियाएँ सदैव सकर्मक ही होती हैं।
(B) 'भाववाच्य' केवल अकर्मक क्रियाओं में ही होता है।
(C) 'कर्मवाच्य' अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं में होता है।
(d) 'कर्तृवाच्य' भी अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं में होता है।

प्र०24 'प्रेरणार्थक क्रिया' का उदाहरण है - (PTET)
(A) माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।
(B) विराज और विशाल जयपुर जा रहे हैं।
(C) मोहन सोहन से पत्र लिखवाता है।
(d) वह आराम से सो रहा है।

06|04|25

प्र०25 सकर्मक क्रिया नहीं है? [I ग्रेड 2020]
(A) मजदूर चाय पी रहे हैं। (B) बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।
(C) पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं। (D) किसान फसल काट रहा था

प्र०26 'सकर्मक क्रिया' का उदाहरण है [I ग्रेड 2020]
(A) रमेश भोजन कर रहा है (B) तारे टिमटिमा रहे हैं।
(C) रेशमा बदायूँ जा रही है (D) नदी बह रही है।

प्र०27 अकर्मक क्रियाएँ है।
(A) खाना (B) टहलना (C) छींकना (D) तोड़ना

प्र०28 'पूर्वकालिक क्रिया' का प्रयोग है? [II ग्रेड 2019]
(A) हमारा परिवार वर्ष 2018 में हिमाचल घूमने गया
(b) विद्यालय में छात्र प्रतिदिन सुबह प्रार्थना करते हैं।
(C) मनीष पिछले वर्ष गाँव गया था
(d) सरिता खाना खाकर पढ़ाई करेगी

(29) अकर्मक क्रिया है? [II ग्रेड 2019]
→ आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।
b) किसान फसल काट रहा है।
c) बालक पतंग उड़ा रहा है।
d) महिलाएँ गीत गा रही हैं।

(30) अकर्मक क्रिया है? (III ग्रेड 2018)
(A) देखना (B) लिखना (C) नाचना (D) पढ़ना

(31) 'राम पुस्तक पढ़ता है' वाक्य में क्रिया है? LDC 2018
→ सकर्मक क्रिया।

J.B.B

6/04/25

(32) 'उर्मिला चिट्ठी लाया' वाक्य में क्रिया का भेद है।
(A) सकर्मक

(33) सकर्मक क्रिया है?
(A) चंदन ने सब्जी खरीदी
(B) माधव सोता है
(C) रामू सदा रोता रहता है।
(d) हरीश छत पर है।

(34) सकर्मक क्रिया वाला वाक्य है? LDC 2018
(A) अब मैं क्या करूं
(B) बंदर केले खाता है।
(C) राधा अभी जयपुर होकर आई है।
(d) साँप रेंगता है।

(35) अकर्मक क्रिया का वाक्य है?
(A) राम गिलास से दूध पीता है।
(B) लड़कियाँ चुपचाप पुस्तकें पढ़ रही हैं।
(C) लड़का मैदान में फुटबॉल खेल रहा है।
(d) लड़की गा रही है।

(36) कौन-सा विकल्प गलत है।
(A) वह कॉलेज से आकर सो गया → पूर्वकालिक क्रिया
(b) वह चतुर निकला → सकर्मक क्रिया
(C) मोर नाचता है। → अकर्मक क्रिया
(d) उसने आम खाया → सकर्मक क्रिया

(37) सकर्मक क्रिया है? (LDC 2018)
(A) गगन आम खाता है।
(B) पक्षी उड़ रहे हैं।
(C) गीता हँस रही है
(d) रमेश देर तक सोता है।

J.15

06/04/25

(38) वे क्रियाएँ जो संज्ञा या विशेषण से बनती है - कहलाती है
(A) नामधातु क्रिया (B) सकर्मक क्रिया
(C) संयुक्त क्रिया (d) वर्तमानकालिक क्रिया

(39) वह खाना खाकर सो गया' वाक्य में रेखांकित क्रिया है?
(A) अकर्मक (B) द्विकर्मक (C) सकर्मक (d) पूर्वकालिक

(40) 'पूर्वकालिक क्रिया' है। L.D.C. 2018
(A) मोहन पत्र लिखता रहा है।
(B) रिद्धिमा भोजन कर रही है।
(C) चिड़िया दाना चुग रही है।
(d) अंकिता खेलकर पढ़ने बैठेगी

(41) 'द्विकर्मक क्रिया' का उदाहरण है? II ग्रेड 2018
(A) नौकर कुत्ते को दूध पिलाता है।
(B) विराज केले और अंगूर खाता है।
(C) राम और श्याम घूमने जाते हैं।
(d) बच्चे सारी मिठाई खा गए।

प्र०42 अकर्मक क्रिया' का उदाहरण है - (~~का~~ ग्रेड 2017)
(A) रोना (B) देखना (C) पढ़ना (d) खाना

प्र०43 प्रेरणार्थक क्रिया नहीं है?

(11)

Date
Page

16/04/25

क्रिया विशेषण

→ क्रिया की विशेषता प्रदर्शित करने वाले शब्द, क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे → चीता तेज दौड़ता है।

मोहन धीरे-धीरे चलता है।

धर्मा अभी-अभी सोकर उठा है।

इसके ④ भेद होते हैं।

① काल वाचक क्रिया विशेषण
② स्थान वाचक क्रिया विशेषण
③ परिमाण वाचक ,, ,,
④ रीति वाचक क्रिया ,,

① काल वाचक क्रिया विशेषण → वह क्रिया विशेषण जि क्रिया के होने के समय का बोध होता है। उसे काल वाच क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे मैं कल जयपुर जाऊँगा।
→ सचिन दिनभर घूमता रहा
→ उसे अभी बुलाओ।
वह तुरंत चला गया।
तुम कब आए?
→ राधा कभी-कभी मेरे घर आती है।
→ पिताजी आज आने वाले थे।
→ राम कल जयपुर जा रहा है।
→ मोहन परसों आएगा।
→ राम प्रतिदिन विद्यालय जाता है।

इसके तीन भेद होते हैं।

(क) समय वाचक → तुरंत, अभी, आज, कल, अब, प्रातः, प
जब, पहले, पीछे, कब, तक, आदि।

(ख) अवधि वाचक → हमेशा, सदा, लगातार, दिनभर, नित्य, आजकल आदि।

(ग) बारंबारता वाचक → बहुधा, प्रतिदिन, बार-बार, कईबार, हर बार।

(2) स्थान वाचक क्रिया विशेषण - वह क्रिया विशेषण जिससे क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है। उसे स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे → माताजी ऊपर बैठी हैं।
सड़क के बांयी ओर चलो।
बाहर चले।
मोहन अंदर सो रहा है।
श्याम ऊपर बैठा है।
तुम्हे यहाँ नहीं आना चाहिए था।
यहाँ आओ।
आगे बढो
इस ओर तालाब है।
उस ओर मंदिर है।
इधर-उधर मत देखो।
उधर देखो।
किधर जा रहे हो।

इसके दो भेद होते हैं :-

(क) स्थिति बोधक (स्थिति वाचक)
(ख) दिशा बोधक (स्थानवाचक क्रिया-विशेषण)

classmate
Date
Page

16/04/25

क स्थिति /स्थिति बोधक → जिस शब्द से क्रिया-स्थल के कहीं स्थित होने का बोध होता है, उसे स्थिति बोधक स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे→ जहाँ, कहाँ, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, अन्यत्र, पास, बगल में, सामने, निकट, दूर, समीप, आस-पास, यहाँ, वहाँ, मध्य में, आगे, पीछे, साथ में, आमने-सामने आदि।

(ख) दिशा बोधक (स्थानवाचक क्रिया विशेषण) - जिस स्थान वा॰ क्रिया विशेषण से कार्य स्थान की दिशा का बोध हो, उसे दिशावाचक, दिशाबोधक स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे→ इधर, इस ओर, दाएँ-बाएँ, किधर, उधर, आदि।

Note→ स्थान वाचक क्रिया विशेषण में किसी स्थान विशेष का नाम नहीं आता है।

③ परिमाण वाचक क्रिया विशेषण → जो क्रिया विशेषण क्रिया के होने के परिमाण का बोध कराए, उसे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। इसमें थोड़ा, अल्प, कम, किंचित, अधिक, कुछ, पर्याप्त, अत्यंत, काफी, केवल, बिलकुल, उतना, इतना, जितना, कितना, दीर्घ, गुरु, बहुतायत, स्वल्प, अनुमानतः, बूँद-बूँद आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

जैसे → थोड़ा बचाकर रखो।
→ कुछ तो खाओ।
कम बोलो।
अधिक सोचो।
धीरज बहुत रोया।
चाय में दूध काफी है।
चीनी थोड़ी है।

17/04/25

→ जरा सोच समझ कर बोलो।
→ इतना क्यों घबराते हो।
→ राधा कम ही बोलती है।
→ जितना चाहे ले लो।
→ सीता केवल मुझे ही जानती है।
→ उतना ही खाओ जितना पचा सको।

→ बच्चा थोड़ा-थोड़ा बोलने लगा है।
→ तनिक हँसो भी।
→ वह उतना ही खाएगा।
→ रमेश कुछ मुस्कराया।

(4) रीति वाचक क्रिया विशेषण -
→ जो क्रिया विशेषण क्रिया की रीति (ढंग/तरीका) का बोध कराये उसे रीति वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। इसमें ऐसे, कैसे, वैसे, जैसे, यूँ (यों तो), खूब, जल्दी, साधारण, ध्यान पूर्वक, केवल, विशेषतया, अवश्य, वृथा, एकाएक, इस प्रकार, ठीक, साक्षात, स्वयं, सहसा, परस्पर, सच, सर्वथा, क्रमशः आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

जैसे → वह ध्यानपूर्वक पढ़ता है।
गोपाल अवश्य आएगा।
→ चींटी धीरे-धीरे चलती है।
→ मैं अवश्य परीक्षा में पास हो जाऊँगा।
→ मोहन तेज दौड़ता है।
→ दुर्घटना क्यों और कैसे हुई?
→ वह चुपके से खा रहा है।
→ धीरे बोलो कोई सुन लेगा।
→ कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
→ सचमुच तुम बड़े निडर हो।

17/04/25

→ तुम खेलने <u>अवश्य</u> आना।

→ वह <u>जल्दी-जल्दी</u> बोल रहा था।

<u>वृथा</u> मत बोलो।

(1)

J.B.B.

निपात

→ हिन्दी में कुछ ऐसे अव्यय भी हैं जो वाक्य में किसी शब्द या पद के बाद लगाकर उसके अर्थ में विशेषता का बोध ला देते हैं। इन्हें निपात कहते हैं

→ इनका अपना कोई अर्थ नहीं होता → ही, तो, भी, तक, मात्र, केवल, आदि शब्द इसके अन्तर्गत आते हैं।

→ महत्वपूर्ण निपात निम्नांकित हैं।

(1) ही → मोहन दिल्ली ही जा रहा है।
वह क्रिकेट ही खेलता है।

(2) भी → मोहन भी जा रहा है।
मोहन दिल्ली भी जाएगा।

3) तो → मोहन तो गया ही था
वह तो आया ही था कि वर्षा होने लगी।

4) तक → मोहन वहाँ जाता तक नहीं।
तुमने पत्र तक नहीं लिखा।

5) मात्र / केवल → तुम्हे मात्र दस रूपये मिलेंगे।
शिक्षा मात्र मनुष्य को ऊँचा उठाती है।

6) भर → वह अपना नाम लिखना-भर जानता है।
मैं उसे जानता भर हूँ।

श्री

(1)

25/03/25

③ योगरूढ़ शब्द → वे शब्द जो सार्थक शब्दो के योग से बने होने पर भी अन्य अर्थ देते हैं, उन्हे योगरूढ़ शब्द कहते है। जैसे → दशानन, पीताम्बर, लम्बोदर, चारपाई आदि।

पर्यायवाची

* पर्यायवाची → पर्याय का सामान्य अर्थ होता है समान इसलिए पर्यायार्थि शब्द का अर्थ हुआ समान अर्थ को व्यक्त करने वाला शब्द। हम यह भी जानते है कि प्रत्येक शब्द का अपना पृथक अर्थ होता है प्रत्येक शब्द का नवीन प्रयोग भी एक नए अर्थ को जन्म देता है। एक ही अर्थ के अनेक शब्द तो होते ही नही है। बल्कि एक ही शब्द अनेक अर्थो को जन्म दे देता है।

① अंक → गोद, क्रोड, पार्श्व, संख्या, आँकड़ा, [illegible]

② अंजाम → परिणाम, फल, नतीजा, अंत, खात्मा

③ अंतःपुर → रनिवास, हरम, जनानखाना, भागपुर

④ अंधकार → अँधेरा, तम, निविड, तमस, तमिस्त्र, तिमिर, ध्वांत, अंधियारा, कलुष, कल्मष।

⑤ अकाल → दुर्भिक्ष, सूखा, दुकाल, कुसमय, कहत।

श्री

(6) अक्सर → अधिकतर, अमूमन, प्रायः, बहुधा, बार-बार

(7) अखंड → अभंग, अविभक्त, पूर्ण, निरंतर, अच्छिन्न, अक्षत।

(8) अखिल → पूर्ण, समस्त, सम्पूर्ण, सारा, पूरा

(9) अग्नि → आग, ज्वाला, हुतभुक, जातवेद, धूमकेतु, शिखी, अरुण।

(10) अचल → अटल, अडिग, अविचल, स्थिर, दृढ़

(11) अर्जुन → पार्थ, धनञ्जय, गाण्डीवधारी, सव्यसाची, गुडाकेश

(12) अधिकार → आधिपत्य, स्वामित्व, स्वत्व, हक, कब्जा, दावा

(13) अनाथ → असहाय, निराश्रित, बेसहारा, यतीम, लावारिस

(12) अनार → दाड़िम, शुकोदन, शुकप्रिय, रामबीज

(13) अन्वेषण → गवेषणा, खोज, जाँच, अनुसंधान, शोध

(14) अश्व → हय, बाजि, घोटक, घोड़ा, तुरंग, तुरिय, तुरंगम सैंधव

(15) असुर → दानव, राक्षस दैत्य, देवेतर, सुरेतर, निशाचर, तमचर, रजनीचर, सुरारि।

(16) आँख → अक्षि, नेत्र, नयन, दृग, चक्षु, लोचन, चश्म।

(17) आकाश → अम्बर, अभ्र, नभ, व्योम, गगन, अंतरिक्ष, अनंत, असीम, आसमान, तारापथ, फलक, शून्य, दिव।

26/03/25

श्री

classmate
Date
Page

(18) आडम्बर → ढोंग, पाखण्ड, ढकोसला, दिखावा, प्रपंच स्वाँग।

(19) आभूषण → अलंकार, भूषण, गहना, आभरण, मंडन, जेवर

(20) आम्र → आम, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, पिकबंधु, मधुफल, मधुदूत, अभिनंदन।

(21) आश्चर्य → अचरज, अचंभा, विस्मय, कौतुक, हैरत, हैरानी, कुतूहल, कौतूहल।

(22) इच्छा → चाह, कामना, अभिलाषा, अभीप्सा, अपेक्षा, आकांक्षा, वांछा, मनोरथ, स्पृहा, लिप्सा, लालसा, ईहा, वासना, तमन्ना, अरमान, मुराद, हसरत, आरज़ू।

(23) इंद्र → पुरंदर, वासव, शक्र, पुरहूत, शचीपति, सुरपति, देवपति, उर्वशीनाथ, मघवा, देवराज, सुरेश, देवेश, देवेन्द्र।

(24) इन्द्रधनुष → सुरधनु, सुरचाप, इन्द्रचाप, शक्रचाप, सप्तवर्ण

(25) इंद्राणी → शची, ऐंद्री, इंद्रा, इंद्रवधू, पुलोमजा।

(26) इंदु → चन्द्रमा, विधु, शशि, राकेश, निशाकर, मृगांक, सुधांशु, क्षपाकर, मयंक, सुधाकर, उडुपति, शशांक, सोम, हिमकर, रजनीश, रजनीनाथ, निशिनाथ।

(27) ईर्ष्या → डाह, मत्सर, जलन, कुढ़न, खार, रश्क

श्री

Date ____
Page ____

26|02|25

(28) उत्सव → त्योहार, पर्व, मह, उद्धव, क्षण, जलसा, जश्न।

(29) उत्पत्ति - उद्भव, जन्म, उद्गम, व्युत्पत्ति, जनन,

(30) तुलना, → उपमा, समानता, सादृश्य, मिलान

(31) उल्लास → उत्साह, उछाह, आह्लाद, उमंग, मोद, प्रमोद, मौ

(32) कटि → कमर, लंक, श्रोणि, मध्यांग

(33) कपटी → छली, धोखेबाज, छलिया, झांसेबाज, चकमेबाज, फरेबी, वंचक, प्रपंची।

(34) कपड़ा → कर्पट, वस्त्र, अम्बर, वसन, चीर, पट, दुकूल, प॰
पोशाक, लिबास

(35) कपोत → कबूतर, पारावत, हारीत, परेवा, रक्तलोचन,

(36) कब्जा → अधिकार, अधिग्रहण, दखल, प्रभुत्व, स्वत्व।

37. कमल → पदम, पारिजात, अरविंद, तामरस, इंदीवर, शतपत्र, नलिन, उत्पल, अंबुज, जलज, नीरज, पंकज, वारिज, अब्ज, सरोज, सरसिज, राजीव, सारंग, कोकनद, पुंडरीक, सरसीरुह।

(38) कमला → लक्ष्मी, चंचला, धनदा, विष्णुप्रिया, इंदिरा, पद्मा, रमा, श्री, सिंधुसुता, कमलासना, न॰

(39) कलंक → दोष, लांछन, दाग, धब्बा, तोहमत

श्री

27/03/25

40) कालिका → कली, कोरक, ओंडी, शिगूफा, गुंचा

41) कला → विद्या, कौशल, हुनर, फन, शिल्प, करतब

42) कामदेव → काम, अनंग, मदन, मनोज, माधव, मन्मथ, कंदर्प, मार, मकरध्वज, स्मर, शम्बरारि, पंचशायक, रतिपति, पुष्पधन्वी, मयन, मीनकेतु।

43) किरण → रश्मि, अंशु, मयूख, मरीचि, शिखा, दीप्ति, कर

44) कुत्ता → श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेय, गंडक, कूकर, मृगारि, सोनहा, श्वजन।

45) कुशल → क्षेम, मंगल, कल्याण, शुभ, भलाई, दक्ष, प्रवीण, पारंगत, निष्णात, निपुण, पटु।

46) कृष्ण → कान्हा, कन्हैया, किशन, श्याम, हरि, नंदनंदन, मुरलीधर, गिरिधर, ब्रजवल्लभ, यदुनंदन, मधुसूदन, गोपीनाथ, कंसारि, ऋषिकेश, द्वारकाधीश

47) केला → कदली, रंभा, भानुफल, गजवसा, मोचा, कुजरासरा,

48) केश → कुंतल, बाल, चिकुर, अलक, कच, शिरोरुह, मेचक, काकुल, चूडा, परम।

50) केहरी → केसरी, सिंह, मृगराज, शेर, हरि, वनराज, मृगारि, मृगेन्द्र, शार्दूल, नाहर, व्याघ्र, वनाधिप

51) क्रोध → रिस, अमर्ष, कोप, गुस्सा, आक्रोश

श्री

CLASSMATE
Date
Page

27/03/25

52 कोयल → कोकिल, कोकिला, पिक, पाली, श्यामा, बसंतदूत
कलापी।

53. कौवा - काक, काग, वायस, पिशुन, करट, एकास, करकाट

54. खग → पक्षी, द्विज, पखेरू, पंछी, विहग, विहंग, विहंगम
शकुनि, नभचर, खेचर, गगनचर, शकुंत, पतंग, अ

55 खर → तीव्र, तीक्ष्ण, स्पष्ट, गधा, गर्दभ, हर बैशाख, अ
आदि।

56 खरा → शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल, साफ, अच्छा।

57 खिड़की - वातायान, गवाक्ष, झरोखा, अन्तर्द्वार, बारी, दरीचा।

58 गंगा → सुरसरि, देवनदी, देवापगा, जाह्नवी, मंदाकिनी,
भागीरथी, पथगा, त्रिपथगा, विष्णुपदी,
सुरधुनि।

59. गणेश → गणपति, गणाधीश, गजानन, लंबोदर, एकदंत
गजवदन, विनायक, भवानी नंदन, वक्रतुण्ड।

60 गरीब → निर्धन, दरिद्र, अकिंचन, दीन, कंगाल, धनहीन,
रंक।

61 गाय → धेनु, सुरभी, गौ, दोग्धी, भद्रा, गौरा, गैया,
गऊ, पयस्विनी

62 गृह → घर, निकेत, आवास, निलय, गेह, धाम,
भवन, निकेतन, सदन, आलय, आगार,
ओक, अयन, मंदिर, वास

|| श्री ||

28/03/25

63 ~~अत~~ चतुर → प्रवीण, कुशल, दक्ष, नागर, निपुण, पटु, विज्ञ

64. चांदनी → कौमुदी, चांद्रिका, ज्योत्स्ना, अमला, जुन्हाई, चंद्रमरीचि, जुन्हैया

65 चांदी - रजत, रूपा, रूपक, रौप्य, जातरूप, कलधौत।

66 चिह्न → प्रतीक, निशान, पहचान, संकेतक।

67 जल → नीर, अंबु, तोय, वारि, पंक, सलिल, आप, जीवन उदक, पय, अमृत, अंभ, आब।

68. झरोखा → गवाक्ष, गोखा, वातायन, रोशनदान।

69. तरंग → लहर, ऊर्मि, वीचि, ऊर्मिका।

70. तरकश → तूणीर, निषंग, तूण, उपासंग, भाथ, कलाप, चोंगा

71 तरु → पेड़, वृक्ष, पादप, सरोरुह, विटप, द्रुम, रूख, गाछ

72. तलवार → खड्ग, खंग, असि, करवाल, खाँड, कृपाण, चन्द्रहास।

73. दक्ष → प्रवीण, कुशल, चतुर, निपुण, निष्णात।

74. दल → समूह, झुंड, झल, निकर, गण, तोम

75. दास - सेवक, नौकर, चाकर, भृत्य, किंकर, अनुचर, परिचर, परिचारक।

|| श्री ||

Date
Page

29/03/2025

76 नाव → नौका, तरी, नैया, तारिणी, नौ, जलयान

77 निर्मल → स्वच्छ, पावन, पवित्र, पूत, शुद्ध, अमल, विमल

78. पति → भर्ता, भर्तार, कंत, स्वामी, नाथ, वर

79 पत्नी → भार्या, ग्रहिणी, दारा, कलत्र, वधू, अर्द्धांगिनी

80 पत्थर → उपल, पाहन, पाषाण, प्रस्तर, अश्म।

81. पहाड़ → गिरि, पर्वत, अद्रि, अचल, भूधर, महीधर, शैल, न

82. पिता → जनक, तात, पितृ, बाप

83. पुत्र → तनय, सुत, पूत, आत्मज, नंदन, तनुज, वत्स, बेटा

84 पुत्री → तनया, सुता, आत्मजा, तनुजा, बेटी, नंदिनी, दुहि

85. प्रभा → कांति, द्युति, ज्योति, आभा, छवि, दीप्ति।

86 पवन → हवा, सलिल, बयार, समीर, मारुत, वात, बा

87. प्रकाश → आलोक, उजाला, दीप्ति, प्रभ, उद्योत

88. प्रातः → प्रभात, प्रातःकाल, अरुणोदय, अहर्मुख, सुबह, भोर

89. पंडित → विद्वान, विद्वजन, बुध, मनीषी, कोविद, विचक्षण,
बुद्धिमान, सुधी, प्राज्ञ।

90 बंदर → वानर, कपि, मर्कट, शाखामृग, हरि, कीश।

J.B.B.

||श्री||

29/03/25

91 बाण → तीर, शायक, नाराच, शिलीमुख, शर, विशिख, कलाप

92 बादल → पयोद, नीरद, वारिद, अंबुद, मेघ, अभ्र, तोयद घन, जलद, जलधर, अम्बुद, बलाहक, कंद।

93. बैल → वृषभ, वृष, ऋषभ, नंदि, शिखी।

94 भानु → सूर्य, दिनकर, भास्कर, मार्तण्ड, रवि, दिवाकर, अंशुमालि, दिननाथ, अर्क, तमारि, आदित्य, पूषण, तरणि, पतंग, मित्र, प्रभाकर।

95. भिक्षुक → याचक, भिखारी, मँगता, मँगन, भिक्षोपजीवी

96. भौंरा → भँवर, भ्रमर, अलि, भृंग, षट्पद, मधुकर, मधुप, शीलीमुख, चचंरीक, मिलिंद।

97. मदिरा → सुरा, वारुणी, शराब, हाला, कादंबरी

98. मनीषी → विद्वान, ज्ञानी, पंडित, चिंतक, विचारक

99. महादेव → शिव, शंकर, जगदीश, नीलकण्ठ, त्रिपुरारि, त्रिनेत्री, त्रिलोचन, उमेश, उमापति, शम्भू, गंगाधर हर, चंद्रशेखर, धूर्जटी, झर्झरी, महेश्वर, भूतेश, कामारि, पिनाकी, कैलाशपति, चन्द्रमौलि, रुद्र।

100 माता → अंब, अंबा, जननी, प्रसू, जन्मदात्री, जन्मदायिनी.

101 मुर्गा → कुक्कुट, ताम्रचूड, तमचुर, ताम्रशिख, उपकार, अरुणशिखा।

01/04/25

102 मुनि → व्रती, तपस्वी, साधु, तापस, योगी

103 मूर्ख → मूढ़, अज्ञ, अज्ञानी, बालिश, जड़, बुद्धिहीन।

104 यमुना → श्यामा, कालिंदी, कालिंद, नंदिनी, रवि-तनया,
तरनि-तनूजा, अर्कजा, तरणिजा, कृष्णा।

105 यामिनी → रात, रात्रि, रजनी, राका, निशि, निशा, शर्वरी
कुहू, विभावरी, क्षपा, तमी, क्षणदा, रैन, तमस्रा

106 युद्ध → रण, समर, संग्राम, विग्रह, लड़ाई।

107 राजा → महीप, भूपति, भूप, भूपेन्द्र, नृप, नरेश, नरेन्द्र,
नरपति, भूपाल, भूमिपति, राव।

108 रावण → दशकंध, दशानन, दशग्रीव, दशशीश, लंकापति,
लंकेश।

109 राक्षस → असुर, निशाचर, रजनीचर, निशिचर, दानव, दैत्य,
मनुजाद, दनुज, जातुधान, कौणप।

110 राम → राघव, रघुपति, दशरथ-सुत, दशरथनंदन, रघुवर,
रघुवीर, रघुकुलमणि, रघुकुल-तिलक, सियावर,
सियापति, कौशल्येय

111 लक्ष्मण → सौमित्र, लखन, लषण, शेषावतार, मेघनादारि

112 लालसा → इच्छा, अभिलाषा, तृष्णा, लिप्सा, लोलुपता।

113 विष्णु → नारायण, लक्ष्मीपति, जनार्दन, चक्रपाणि, गरुड़ध्वज
अच्युत, गोविंद, चतुर्भुज, मधुरिपु, शेषशायी,
रमेश, माधव, हरि, उपेन्द्र, मधवारि।

114 शारदा → सरस्वती, भारत, वाग्देवी, वीणापाणि, वाक, वागेश्वरी, गिरा, विमला, निर्मला, ब्रह्माणी।

115 श्वेत → शुभ्र, धवल, शुक्ल, सफेद, गौर, वलक्ष, अवदात, अमल, उज्जवल, दीप्त, सित।

116 शेषनाग → अहीश, फणीश, धरणीधर, सहस्त्रानन।

117 शेर → सिंह, मृगराज, वनराज, शार्दूल, केहरी, केसरी, केशी, नाहर, हरि, मृगेन्द्र, वनेन्द्र।

118 स्वर्ग → नाक, सुरलोक, देवलोक, दिव, द्यौ।

119 सहेली → सखि, सहचरी, सजनी, आली, हेली, सैरंध्री

120 सेना → कटक, अनी, अनीक, चमू, अनीकिनी, दल, सैन्य, वाहिनी।

121 सौरभ → सुगंध, सुगंधि, सुरभि, खुशबू, मदगंध, सुवास।

122 हिमालय → हिमगिरि, हिमाद्रि, हिमवान, पर्वतराज, नगराज।

123 हाथ → कर, हस्त, पाणि, दस्त

124 हनुमान → पवनपुत्र, अंजनिपुत्र, महावीर, कपीश, आंजनेय, वज्रांग, बजरंगबली, रामदूत, वज्रदेह।

125 हाथी → हस्ती, गज, कुंजर, मतंग, करी, नाग, दंती, द्विरद, वितुंड, सिंधुर, कुंभी, गयंद

विलोम

J.B.B.

अर्थ → विपरीत, | प्रतिकूल | विरुद्ध | प्रतिलोम

परिभाषा → शब्द का परस्पर विरोधी अर्थ बताने वाला।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. जो शब्द जिस जाति (तत्सम, तद्भव, विदेशी) का है उसका विलोम शब्द भी उसी जाति का होता है।

तत्सम

प्रकाश → अंधकार
सुगन्ध → दुर्गन्ध
अतिथि → अतिथेय
आर्द्र → शुष्क
शुक्ल → कृष्ण
न्यून → अधिक
लाभ → हानि
तीव्र → मन्द

तद्भव

उजाला → अँधेरा
थोड़ा → बहुत
काला → गोरा | सफेद
ऊपर → नीचे
आगे → पीछे
गीला → सूखा
धीरे → जल्दी

विदेशज

खुशबू → बदबू
मेहमान → मेजबान
कम → ज्यादा
नफा → नुकसान
तेज → सुस्त | कुन्द

14/04/25

2. व्याकरणात्मक कोटि में प्रकृति (स्वभाव) के अनुसार विलोम शब्द होता है।

दिन → रात — आकर्षण → विकर्षण
सुख → दुख — गुरुता → लघुता
संयोग → वियोग — संश्लेषण → विश्लेषण

सर्वनाम

अपना → पराया
हमारा → तुम्हारा
जो सो
मम → तव
मदीय त्वदीय
तत् त्वत्

विशेषण

सुन्दर → कुरूप — आकृष्ट → विकृष्ट
संयुक्त → वियुक्त — अच्छा → बुरा
लघु → गुरु — दीर्घ → ह्रस्व
बड़ा → छोटा — भारी → हल्का

क्रिया

हँसना → रोना — जागरण → शयन
आना → जाना — उतार → चढ़ाव
गमन → आगमन — (उठना)

अव्यय

जब → तब — यद्यपि – तथापि।
यदा → कदा
यदि → तो
यत्र तत्र

14/04/25

③ समान प्रत्यय वाले शब्द ही परस्पर विलोम होते हैं।

लघुता → गुरुता	लघिमा → गरिमा
लाघव → गौरव	लघुत्व → गुरुत्व
लघिष्ठ → गरिष्ठ	

Note राजा - प्रजा (शासक - शासित के आधार पर)
रंक (धन के आधार पर)
रानी (लिंग के आधार पर)

काला < सफेद / गोरा

उपसर्गों के द्वारा विलोम

(अ)

श्लील → अश्लील	मर्त्य → अमर्त्य
पेय → अपेय	ज्ञात → अज्ञात
ज्ञेय - अज्ञेय	परिहार्य → अपरिहार्य
जय → अजय	योग्य → अयोग्य
चिन्त्य → अचिन्त्य	विजित → अविजित

अन्

अन्त → अनन्त	आवरण → अनावरण
आदि → अनादि	उत्पादक → अनुत्पादक
ऋत → अनृत	उर्वर → अनुर्वर
ऐश्वर्य → अनैश्वर्य	उपलब्ध → अनुपलब्ध
आपत्ति → अनापत्ति	अन्वय → अनन्वय
आहूत → अनाहूत	औचित्य → अनौचित्य
	इच्छा → अनिच्छा

14/04/25

लोभी → अनलोभी
देखी → अनदेखी
सुनी → अनसुनी
जानकार → अनजान
पढ़ → अनपढ़

न

गण्य → नगण्य
आस्तिक → नास्तिक
सकारात्मक → नकारात्मक

ना

राज → नाराज
कामयाब → नाकामयाब
लायक → नालायक
जायज → नाजायज

निर

अभिमानी → निरभिमान
रोग | रोगी → नीरोग
स्वार्थी → निः स्वार्थ
लोभी → निर्लोभ
बली निर्बल
धनी निर्धन
अहंकारी निरहंकार
अपराधी निरअपराध

वि

गत → विगत
संगति → विसंगति
सम्मुख → विमुख
संयोग → वियोग
संश्लेषण → विश्लेषण
तृष्णा → वितृष्णा

classmate Date Page

13/04/25 14/04/25

प्रति

घात → प्रतिघात
द्वन्द्वी → प्रतिद्वन्द्वी
आरोप → प्रत्यारोप
* आवर्तन → प्रत्यावर्तन
अर्पण → प्रत्यर्पण

अप

शकुन → अपशकुन
यश → अपयश
उपकार → अपकार
उत्कर्ष → अपकर्ष
कीर्ति → अपकीर्ति
अपचय ↔ उपचय
मान → अपमान

RAS 2016

दयालु → निर्दय
गरिमा → लघिमा
कृतज्ञ → कृतघ्न

2016

आविर्भाव → तिरोभाव
ईप्सित → अनीप्सित
पौरस्त्य / पौर्वात्य → पाश्चात्य
स्वकीया → परकीया

2018

तृष्णा → वितृष्णा
अभिज्ञ → अनभिज्ञ
सायास → अनायास
सुकर → दुष्कर

2018

अद्यतन → अनद्यतन
आदृत → अनादृत (तिरस्कार)
अंतरंग → बहिरंग
स्तेय → अस्तेय

2021

दण्ड → पुरस्कार
विधिसम्मत → विधिविरुद्ध
ऋत → अनृत
तिरस्कार → सत्कार
समास → व्यास
संश्लेषण → विश्लेषण
ग्राह्य → त्याज्य
अनिर्वचनीय → निर्वचनीय

शालीन → धृष्ट
गत → आगत / विगत
अज्ञ → विज्ञ
आर्ष → अनार्ष

J.B.B.

Date
Page

14/04/25

अल्प → बहु
अभिज्ञ → अनभिज्ञ
अज्ञ → विज्ञ
अपना → पराया
अपव्यय → मितव्यय
नवीन/आधुनिक → प्राचीन
अधम → उत्तम
आविर्भाव → तिरोभाव

अमृत → विष
सुधा → गरल (अमृत)
अवतल → उत्तल
अन्धकार → प्रकाश
तम → ज्योति
आलसी → उद्यमी
धूप → छाया
अपराधी → निरपराध
स्वतंत्र → परतंत्र
अपेक्षा → उपेक्षा
अवनी → अम्बर
इह → पर (वहाँ)
इहलोक → परलोक
उग्र → सौम्य

कुलटा → पतिव्रता
कृष्ण → शुक्ल
कायर → शूर
क्रोध → क्षमा
कोप → कृपा
कृतज्ञ → कृतघ्न
कृश → स्थूल (मोटा)

अंतरंग – बहिरंग
अधः → उर्ध्व
अथ → इति
अग्नि → जल
अवनत → उन्नत
आर्द्र → शुष्क
आकाश → पाताल/पृथ्वी
इकट्ठा → अलग

उतार → चढ़ाव
उत्तर → प्रश्न/दक्षिण
उर्ध्व → अधः
ऊँचा → नीचा
ऊसर → उर्वर
ऋजु → वक्र
ऋणात्मक → धनात्मक
एड़ी → चोटी
~~चोटी~~
एकाकी → समग्र
ऐच्छिक → अनैच्छिक/अनिवार्य
कटु → मधुर
कनिष्ठ → ~~ज्येष्ठ~~ वरिष्ठ
कड़वा → मधुर

स्याह → सफेद
क्षमा → क्रोध
क्षुद्र → महान
क्षीण → स्थूल/पुष्ट
दुर्जन/खल → सज्जन
गौण → मुख्य
गुप्त → प्रकट
गहरा → उथला/छिछला

14/04/25

ग्रीष्म – शीत	चोर → साहूकार
गाढ़ा → पतला | झीना	ज्वार → भाटा (उतार)
घना → छितरा | बिखरा	झोपड़ी → महल
घृणा → प्रेम	ठोस → तरल
घाटा → मुनाफा	डरपोक → निडर
घमण्डी → विनम्र | विनीत	तेजस्वी → निस्तेज
चिरन्तर → क्षणिक	तामसिक → सात्विक

तरुण → वृद्ध	बहु → अल्प
देव → दानव	बैर → प्रीति
देवता → राक्षस	बंजर → उपजाऊ
दास → स्वामी	बद → नेक
धवल → कृष्ण|श्यामल	बर्बर → सभ्य
ध्वंस → निर्माण	बद्ध → मुक्त
नवीन → प्राचीन	बाढ़ → सूखा

वृद्धीकरण → संक्षिप्तीकरण	नख → शिख
विपत्ति → सम्पत्ति	निर्मल → मलिन
विधवा → सधवा	निद्रा → जागरण
विरोध → समर्थन	नगर → ग्राम
वृद्धि → क्षय	नश्वर → शाश्वत
विद्वान → मूर्ख	निषेध → विधि
व्यास → समास	नरक → स्वर्ग

बारीक – मोटा	वैमनस्य – सौमनस्य
भीरु → निर्भीक	विलास → तपस्या
मधुर → कटु	श्याम → श्वेत
मनुज → दनुज	श्रद्धा → ~~घृणा~~ घृणा
मृदु → कठोर	सन्यासी → गृहस्थी
मसृण → रूक्ष	सुधा → गरल
मूक → वाचाल	सात्विक → तामसिक

नूतन → पुरातन	महँगा → सस्ता
परकीय → स्वकीय	मिलन → विरह | बिछोह
पतन → उत्थान	युगल → एकल
पुण्य → पाप	मित्र → शत्रु
प्राची → प्रतीची	रिक्त → पूर्ण
पंडित → मूर्ख	रुग्ण → स्वस्थ | नीरोग
पैना → भोथरा	वरदान → अभिशाप

संध्या → प्रातः
स्तुति → निंदा
हानि → लाभ

Date
Page

17/04/25

शब्द युग्म

नाम अर्थ

1. अभय → निडर
उभय → दोनों

2. अवधी → समय सीमा
अवधि → एक भाषा

3. तरणि → सूर्य
तरणी → नाव

4. बहन → भगिनी
वहन → भार ढोना

5 पथ – रास्ता
पथ्य → रोगी के खाने योग्य भोजन

6 अश्व → घोड़ा
अश्म → पत्थर

6 सर्वदा → हमेशा
सर्वथा → सब तरह से

7 अनल → आग
अनिल → हवा

9 प्रणीत – रचित
परिणीत → विवाहित

14 षष्टि – साठ (एक संख्या)
षष्ठी → छठा (6वाँ)

10 अजर → देवता/ जो कभी बूढ़ा न हो
अजिर → आँगन

11 ऋत → सत्य
ऋतु → मौसम

12 खर → गधा
खरा → विशुद्ध

13 दैव → देवता
दैवा → भाग्य

15 तर्क → बहस | दलील
तक्र → छाछ

16 क्षति → हानि
क्षिति → पृथ्वी

17 आभरण → आभूषण
आमरण → मृत्यु पर्यन्त

Date 17/04/18

→ वर्ण – रंग | सामाजिक वर्ग
व्रण → घाव

→ अन्तर्देशीय → देश के भीतर
अन्तरदेशीय → देश के मध्य

→ अग → सूर्य | पहाड़
अघ → पाप

→ अनभिज्ञ – अनजान
अभिज्ञ → जानकार

→ अपत्य → सन्तान
अपथ्य → न खाने योग्य

अनु → पीछे
अणु → कण

→ साम → एक वेद | नीति
शाम → संध्या

अपकार – बुराई
उपकार भलाई

→ अरथी → शव को ले जाने वाली शैय्या
अर्थी → याचक

अपेक्षा – आशा | तुलना
उपेक्षा → अवहेलना | निन्दा

→ सर्ग → पाठ | अध्याय | भाग | खण्ड
स्वर्ग → देवलोक

अभिराम – सुन्दर
अविराम → बिना रुके (लगातार)

→ कृपण → कंजूस
कृपाण → तलवार

अभिज्ञ – जानकार
अविज्ञ – मूर्ख

→ अभिराम → सुन्दर
अविराम → लगातार

अरि – शत्रु
अरी सखी | सम्बोधन

→ अकथ → जो कहा न जा सके
अथक → जो थके नहीं।

अवलम्ब → सहारा
अविलम्ब → शीघ्र

→ अग → सूर्य | पहाड़
अघ → पाप

अवधि – समय सीमा
अवधी → एक भाषा

→ अनल → आग
अनिल → हवा

classmate

Date
Page

17/04/25

अवशेष → बाकी
अविशेष → सामान्य

आराति – विराम
आरती – पूजा

अवमर्श – स्पर्श | सम्पर्क
अवमर्ष → आलोचना

आरि → ज़िद्द
आरी → काटने का औज़ार

आलि → भ्रमर
आली → सखी | सम्बोधन

आहुत → हवन सामग्री
आहूत → बुलाया हुआ

अशर → बिना बाण के
असर → प्रभाव

आवृति → दोहराना
आवृत → ढका हुआ |

अलिक → ललाट
अलीक → झूठा

इति – समाप्त
ईति → दैवि दैवीय आपदा

अलोक → अदृश्य
आलोक → प्रकाश

उत्पल → कमल
उपल → पत्थर | ओले

2, अश्व → घोड़ा
अस्व → पराया
अश्म → पत्थर

आभरण → आभूषण
आवरण → पर्दा

→ अंश → हिस्सा | भाग
अंस → कंधा

कटिबन्ध → कमर का आभूषण
कटिबद्ध → तैयार

→ अयश → बदमाशी
अयस → लोहा

कपट → छल
कपाट → द्वार

→ आदि → आरम्भ
आदी → आदत वाला

कथा → कहानी
कंथा → गूदड़ी

आधि → मानसिक पीड़ा
व्याधि → शारीरिक पीड़ा

कलि → कलयुग
कली → कलिका

17/04/25

→ कलुष → पाप
कलिश → वज्र

→ कलश → घड़ा
कलुष → पाप

→ कान्ति → चमक
क्रांति → परिवर्तन

→ कुल → वंश/सब
कूल → किनारा

→ कुण्डल → कान का आभूषण
कुन्तल → बाल

→ कुच → स्तन
कूच → प्रस्थान

→ कोर → किनार
कौर → ग्रास

→ कृतज्ञ → उपकार मानना
कृतघ्न → उपकार न मानना

→ खाद्य → खाने योग्य
खाद → उर्वरक

→ गदा → शस्त्र
गधा → गर्दभ

ओर → तरफ
और → दूसरा

गर्त → गड्डा
गर्द → धूल

ग्रंथि → गाँठ
ग्रन्थी → गुरु ग्रंथ पढ़ने वाला

गेय → गाने योग्य
ज्ञेय → जानने योग्य

घट → घड़ा
घाट → किनारा

घन → बादल
घण → हथौड़ा

दिन → दिवस
दीन → गरीब

चपल → चंचल
चपला → बिजली

चर्म → चमड़ा
चरम → अन्तिम

चिर → सदैव
चीर → वस्त्र

चरित्र – आचरण
चरित – जीवनी

तर्क → बहस/दलील
तक्र → छाछ

17/04/25

तरणि – सूर्य
तरणी – नाव

नीर → पानी
नीड़ घोंसला

दैव → देवता
दैव → भाग्य

परिताप – दुख
प्रताप → पराक्रम

नाक → स्वर्ग | नासिका
नाग → साँप

परिधान → वस्त्र
प्रधान → मुख्य | प्रमुख

निर्जर → निर्जर देवता
निर्झर झरना

परुष → कठोर
पुरुष → व्यक्ति

दिवा → दिन
दीवा दीपक

प्रथा – रीति | रिवाज
पृथा → कुन्ती

निर्माण रचना
निर्वाण मोक्ष

पर्यंक – पलँग
पर्यन्त → सीमा | तक

द्युति चमक
दूती सन्देश वाहिका

प्रसाद – कृपा | भोग
प्रासाद → महल

प्रवाद – जनश्रुति
प्रमाद → आलस्य | भूलचूक

वर्ण रंग | सामाजिक वर्ग
व्रण → घाव

बहु → बहुत | अधिक
बहू → वधू

वरण → चुनना
वारण → हाथी | न्योछावर

बेल → लता
बैल → वृषभ

वसन → वस्त्र
व्यसन → बुरी आदत

बात → बातचीत | वार्ता
वात → वायु

विषमय → जहरीला
विस्मय आश्चर्य

18/04/25

पायस – खीर पावस – वर्षा ऋतु	वृत – घेरा / गोला व्रत → उपवास
पंक → कीचड़ पंख → पर	शर → बाण सर → तालाब
बदन → शरीर वदन → मुख	शम → शान्ति सम → बराबर / समान
बलि → बलिदान बली → योद्धा	शुचि → पवित्र शची → इन्द्राणी
बान → आदत बाण → तीर	शूर → वीर सूर → सूर्य / अंधा
भवन → घर भुवन → संसार	शुल्क → कर शुक्ल → सफेद
मन्थर → धीरे मन्थरा → दासी विशेष	शप्त → शाप दिया हुआ सप्त → सात
मल → गन्दगी / मैल मल्ल → पहलवान	सिल → पत्थर सील → मुहर / नमी
लता → बेल लत्ता → वस्त्र	सिता → मिश्री सीता → जानकी
व्यजन → पंखा व्यंजन → पकवान	सुत → पुत्र सूत → धागा / सारथी
व्याज → बहाना ब्याज → सूद	

CLASSMATE
Date
Page

18/04/25

शंकर → शिव
संकर → मिश्रण

श्वेत → सफेद
स्वेद → पसीना

श्वजन → कुत्ता
स्वजन → परिजन | अपना

श्रमण → भिक्षु
श्रवण → कान | सुनना

ह्रास → हानि
हास → हँसी

क्षिति → पृथ्वी
क्षति → हानि

हेम → सोना
होम → यज्ञ

हंस → मराल (एक पंक्षी)
हँस → हँसना

J.B.B.

classmate

Date
Page

25/04/25

जन्तु एवं उनके बच्चों का सम्बंध

जन्तु → बच्चे
तितली → लार्वा
गाय → बछड़ा / बछड़ी
भेड़ → मेमना
शेर → शावक
बिल्ली : बिलौटा
ऊँट : टोरड़ा / टोरडी
सर्प : सँपोला
श्वान (कुत्ता) : पिल्ला
मुर्गी : चूजा
मेंढक : बेंगची / टेड़पाल
कीट → लार्वा
भैंस : पाड़ा / पाडी
चीता : शावक

जन्तु एवं उनकी बोलियाँ

ऊँट → बलबलाता है।
कोयल → कूकती है।
घोड़ा → हिनहिनाना
तोता → टें टें
बकरी → में मे / मिमियाना
भेड़ / भेड़ा → भें भें
मुर्गा → कुकड़ूँ
शेर → दहाड़ना / गरजना
सियार → हुआँ, हुआँ
कौआ → काँव काँव
चिड़िया → चहचहाना
पपीहा → पीऊ पीऊ

भैंस → चुकराना
मुर्गी → कुकड़ाती है।
साँड → डकारता है।
सुअर → किकियाता है।
खरगोश → ''
भालू / रीछ → खों खों
कबूतर → गुटर गूँ
गधा → रेंकता रेंकता
चूहा → चूँ चूँ
बिल्ली → म्याऊँ म्याऊँ
भौंरा → गुंजारता है।
बंदर → किकियाता है।
मेंढक → टर्र टर्र

J.18.D
25/04/25

साँप → फुफकारता है।
हंस → कूजता है।
गाय → रँभाना
झींगुर → झँकारता है।
बकरा → बौं बौं
मक्खियाँ → भिनभिनाहट
मोर → केंकता है।
सिंह → गरजना
हाथी → चिंघाड़ना
उल्लू → घुघुआना

जानवर → प्रतीक

बैल → काम/मूर्खता
लोमड़ी → मक्कारी
सूअर → घृणित वृत्ति
ऊँट → बेडौलपन
गधा → मूर्खता
भैंसा → तामस वृत्ति
शेर → साहस
हाथी → विशालता
कुत्ता → स्वामी भक्त
गीदड़ → कायरता

(पक्षी)
उल्लू → अज्ञान
गरुड़ → वैभव
बाज़ → धावामारी
कौआ → चालबाजी
तोता → रटन्त
हंस → विवेक

J.B.15

classmate
Date
Page

(ग) सर्प

नाग : क्रोध
शेषनाग → काल

(घ) प्रसिद्ध पुरुष

दधीचि → आत्मबलिदान
युधिष्ठिर → न्यायप्रिय
श्रवणकुमार → आज्ञाकारी पुत्र
हरिश्चन्द्र → सत्यवादी
कर्ण → दानवीर
चाणक्य → कूटनीति
विभीषण → घर का भेदी
रावण → घमण्डी
सावित्री → पतिव्रता
हिटलर → तानाशाह
कामदेव → रूपवन्ता
जयचन्द → देश द्रोह

(ङ) वनस्पति

पीपल : ध्यान
कमल : प्रसन्नता
बरगद : सृष्टि
गुलाब : सौन्दर्य
बिल्व : कल्याण
तुलसी

विविध (च)

रुद्राक्ष → पीड़ाहरण
शिवलिंग → सम्पूर्णता
कलश → जीवन
चक्र काल / धर्म
नारियल → समृद्धि

22/04/25

एकल शब्द (वाक्यांश के लिए एकल शब्द)

→ भाषा में ऐसे शब्दों को जो अमित अर्थ को समेटे हुए हैं, उन्हें 'वाक्यांश के लिए एक शब्द'

RAS 2012

→ किसी के आगमन पर सत्कार करना → आतिथेय
→ जो जाना ही न जा सके → अज्ञेय
→ जो कल्पना से भी परे हो → कल्पनातीत
→ जिसका निर्णय न हो पाया हो → अनिर्णित

RAS 2013

→ जो आदेश एक निश्चित अवधी के लिए लागु हो → अध्यादेश
→ पर्वत के ऊपर की समतल भूमि → अधित्यका
→ वह जमीन जिसमें कुछ भी पैदावार न हो → ऊसर | बंजर
→ वह व्यक्ति जो चोरी छिपे माल लाता हो-ले जाता हो → तस्कर
→ वह भोज्य सामग्री जिसे यात्री रास्ते में खाने के लिए ले जाता है → पाथेय
→ उत्तर व पश्चिम के बीच की दिशा → वायव्य

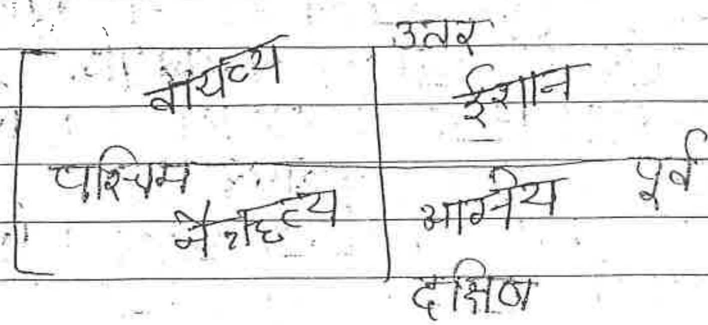

2016

→ उत्तर व पूर्व की दिशा → ईशान
→ वह जमीन जिसमें अच्छी पैदावार हो → उर्वरा | उपजाऊ
→ जानने की इच्छा रखने वाला → जिज्ञासु
→ सप्ताह-सप्ताह में होने वाला → साप्ताहिक

22/04/25

2018 → सेवा करने की इच्छा रखने वाला → सेवार्थी
जिसे पार करना कठिन हो → दुर्लघ्य
जो दूसरों के स्थान पर अस्थायी रूप से कार्य करे → स्थानापन्न

2021 जो व्यक्ति बहुत बोलता हो → वाचाल
विरोध न होने पर भी विरोध दिखाई पड़ना → विरोधाभास
→ धरती का वह भाग जिस पर कुछ भी उत्पन्न न हो → ऊसर
→ अपने प्रति किए गए उपकार को न मानने वाला → कृतघ्न

2023 किसी उक्ति को दोहराना → उद्धृत | विश्लेषण
→ व्याकरण शास्त्र का ज्ञाता → वैयाकरण
→ बच्चों से लेकर बूढ़ों तक → आबालवृद्ध
→ दूसरे का मुँह देखने वाला → परमुखापेक्षी।

वाक्यांश में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर -

→ जो समय की दृष्टि से उचित हो → समयोचित
→ जो न्याय की दृष्टि से संगत हो → न्याय संगत
→ जो मृत्यु की ओर उन्मुख हो → मृत्युन्मुख
→ जिसके पाणि में वज्र हो → वज्रपाणि
→ जिसका हृदय सिंधु के समान हो → सिन्धु हृदय
→ जो उर्वर न हो → अनुर्वर
→ जिस पर किसी का अंकुश न हो → निरंकुश
→ जो किसी के दर्शन के लिए बेचैन हो दर्शनातुर
→ जिसने पक्का निश्चय कर लिया हो → दृढ़ निश्चय
→ जो हृदय को पिघला दे → हृदय द्रावक
→ जिसे देखकर हृदय फटने लगे → हृदय विदारक
→ उषाकाल में पानी पीना → उषःपान
→ विष का पान करने वाला → विषपायी
→ स्तन से दूध पीने वाला (प्राणी) - स्तन्यपायी

classmate
Date
Page

22|04|25

2. शब्दों में पर्याय शब्दों के आधार पर

→ जिसकी मृत्यु अत्यंत निकट हो → मरणासन्न
→ जिसका प्रसवकाल अत्यंत निकट हो → आसन्न प्रसवा
→ दूसरों में दोष खोजने की प्रवृत्ति → परछिद्रान्वेषण
→ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला → परदु:खकातर
→ जो काँटों से भरा हो → कण्टकाकीर्ण
→ दिन में देखा जाने वाला स्वप्न → दिवास्वप्न
→ जो दूसरों के मुख की ओर देखता है → परमुखापेक्षी

③ उपसर्गों के द्वारा एकल निर्धारण
→ जिसको समझना सरल न हो → दुर्बोध
→ जिसे दबाना कठिन हो → दुर्दम | दुर्दान्त
→ जिसे पाना कठिन हो → दुष्प्राप्य
→ जो कठिनाई से मिले → → दुर्लभ
→ जिसे जीतना आसान न हो → दुर्जेय
→ जो कठिनता से भेदा जा सके → → दुर्भेद्य
→ जिसे पार करना कठिन हो → दुस्तर | दुष्पार
→ जिसका रंग | ढंग अच्छा न हो → दुर्ललित
→ जिसे वहन करना कठिन हो → दुर्वह
→ जिसे करना सरल हो → सुकर
→ जिसे समझना कठिन न हो → सुबोध
→ जो सरलता से पच जाए → सुपाच्य
→ जहाँ जाना सरल हो → सुगम
→ जिसकी पूर्ति आसानी से हो जाए → सुपूर्य
→ हिंसा के बदले हिंसा → प्रतिहिंसा
→ बदले में लगाया गया आरोप → प्रत्यारोप
→ किसी के बदले में स्थान पर की गई नियुक्ति → प्रतिनियुक्ति
→ किसी अंग के स्थान पर दूसरा अंग लगाना → अंगप्रत्यारोपण
→ बदले में प्राप्त होने वाला उत्तर → प्रत्युत्तर
→ बदले में किया जाने वाला उपकार → प्रत्युपकार
→ जिसके बदले में आशा की गई हो → प्रत्याशित

22/04/25

उषाकाल से पहले का समय → प्रत्युषकाल
जहाँ किसी प्रकार की बाधा न हो → निर्बाध | अबाध
जो ज्यादा बड़ा न हो → नातिदीर्घ
जिसे किसी ने न सूंघा हो → अनाघ्रात
जिसके समान अन्य कोई न हो → अनुपम | अद्वितीय

जहाँ कोई विघ्न न हो → निर्विघ्न
जो कभी न हो सके | न हुई हो → अनहोनी
जो कामयाब न हो सके → नाकामयाब
जिसे कोई पसंद न करता हो → नापसंद
प्रत्ययों द्वारा एकल शब्दों का निर्माण **
जिसे सरलता से पढ़ा जा सके → सुपाठ्य
जो कहने योग्य न हो → अकथनीय
जिसके विषय में कुछ न कहा जा सके → अनिर्वचनीय
जो पीने योग्य न हो → अपेय
जिसे छोड़ा न जा सके → अत्याज्य अत्याज्य
जो शोक का विषय न हो → अशोच्य
बार-बार युद्ध करने की इच्छा | इच्छुक → युयुत्सा | युयुत्सु
भोजन की इच्छा | इच्छुक → बुभुक्षा | बुभुक्षु
कोई काम करने की इच्छा → चिकीर्षा
कोई काम करने की इच्छा वाला → चिकीर्षु
विजय प्राप्ति की तीव्र इच्छा → विजीगिषा
" का तीव्र इच्छुक → विजीगिषु
जो दूसरों का शुभ चाहता हो → शुभैषी | शुभेच्छु
जो दूसरों का हित चाहता हो → हितैषी
जीने की इच्छा | का इच्छुक → जिजीविषा | जिजीविषु
उद्योग | युद्ध | जीतने | जय करने का इच्छुक → जिगीषा | जिगीषु
जो अत्यन्त भूखा हो → बुभुक्षु | बुभुक्षित
पीने की तीव्र इच्छा | तीव्र प्यास → पिपासा
पीने की तीव्र इच्छा हो | जो अत्यन्त प्यासा हो → पिपासु
जानने की प्रबल इच्छा → जिज्ञासा

J.B.B.

Date
Page

22/04/25

→ तैरने (पार करने) की तीव्र इच्छा → तितीर्षा
→ की इच्छा रखता है → तितीर्षु
→ मोक्ष प्राप्ति की (तीव्र) इच्छा → मुमुक्षा
इच्छा रखता है → मुमुक्षु
→ मरने की इच्छा → मुमूर्षा
→ सेवा करने की इच्छा शुश्रूषा
सेवा करने का प्रबल इच्छुक → शुश्रूषु

→ पानी भरकर जीवन चलाने वाला → पनिहारा
→ घास बेचकर जीवन चलाने वाला → घसियारा | घासिहारा
→ चूड़ियाँ बेचकर जीवन चलाने वाला → मनिहारा
→ मछलियों से आने वाली गंध → मछगंध | मछराइंध

* विशिष्ट शब्दांशों द्वारा एकल शब्द

(1) जिसकी मृत्यु अत्यन्त निकट हो → आसन्नमृत्यु
→ जो अत्यधिक नशे के कारण विवेकहीन हो गया हो → मदान्ध

→ जिसे देखकर लज्जा उत्पन्न हो → लज्जास्पद
→ वह काव्य जिसमें सम्पूर्ण जीवन चरित हो → महाकाव्य
→ वह काव्य जिसमें जीवन का एक अंश हो → खण्ड काव्य
→ समुद्र से सम्बधित आग → बड़वानल
→ पेट से सम्बधित आग → जठरानल
→ जंगल में लगने वाली आग → दावानल
→ वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो → विधुर
→ जिस स्त्री के सन्तान न हो → बांझ | बन्ध्या
→ जो सदैव से चला आया है → सनातन
→ जो सदैव एक सा बना रहता है → शाश्वत
→ जिसका पालन दूसरे ने किया हो → परभृत
→ जो निरन्तर भ्रमण करता है → यायावर | घुमक्कड़
→ जो भोजन रोगी के लिए उचित है → पथ्य
→ ⟶ अनुचित → अपथ्य

22/04/25

→ जिसकी कोई स्पृहा / इच्छा नहीं → निःस्पृह

→ जिस स्त्री का अभी विवाह हुआ हो → नवोढ़ा
→ जिस स्त्री का पति विदेश में रहता है → प्रोषित पतिका
→ जिस स्त्री का पति विदेश से आ गया है। → आगतपतिका
→ जिस स्त्री का पति विदेश से आने वाला है → आगमिष्यत्पतिका
→ जिस स्त्री के पति ने दूसरी शादी करली हो → अध्यूढ़ा
→ जो कम / संयमपूर्वक खर्च करता है → मितव्ययी
→ जो व्यर्थ / अनाप-शनाप / अँधाधुंध खर्च करता है → अपव्ययी

→ जो बिना सोचे समझे विश्वास करता है → अन्धविश्वासी
→ जो पिता से प्राप्त हुआ हो → पैतृक
→ जो राशि विश्वास के रूप में जमा कराई जाती है → धरोहर राशि
→ जो मांस का भोजन करता हो → सामिषभोजी / मांसाहारी
→ जो मांस का भोजन नहीं करता → निरामिषभोजी
→ जो शाक पात का / वानस्पतिक / खाद्यान्न का भोजन करता हो → शाकाहारी
→ नाटक के मंच का भीतरी / बाहरी परदा → नेपथ्य / यवनिका
→ नाटक का पर्दा गिरना → पटाक्षेप / यवनिका पतन
→ किसी भवनादि के टूटने-फूटने के बाद बचे हुए भाग → भग्नावशेष
→ प्रसंग / घटना में लिप्त न हो → निर्लिप्त / तटस्थ
→ जो मर्म / हृदय को छू ले / प्रभावित करे → मर्मस्पर्शी / मार्मिक
→ जो किसी के हृदय की बात जानता है → मर्मज्ञ
→ जो शत्रु का घात करता है। → शत्रुघ्न
→ जिसके चेहरे का रंग उड़ गया → हतप्रभ
→ पशुओं द्वारा जुगाली करने की प्रक्रिया → पागुर
→ सुबह किया जाने वाला अल्पाहार → कलेवा / प्रातःराश
→ शाम / रात को किया जाने वाला भोजन → ब्यालु
→ जिसने ऋण चुका दिया है → उऋण
→ पूर्व व उत्तर दिशा का कोण → ईशान
उत्तर व पश्चिम दिशा का कोण → वायव्य
दक्षिण व पश्चिम दिशा का कोण → नैऋत्य

J.B/B

23/04/25

→ दक्षिण व पूर्व का कोण → आग्नेय
→ आकाश में असंख्य तारों का प्रकाश पुंज → नीहारिका
→ जिसका पालन-पोषण कौआ करता है → काकपाली
→ नाटक के आरम्भ में की जाने वाली स्तुति → नान्दीपाठ
→ नाटक में हँसाने वाला पात्र → विदूषक
→ रात एवं सांयकाल के मध्य का समय → गोधूलिबेला
→ दिन का प्रथम भाग → पूर्वाह्न
→ दिन का मध्य भाग → मध्याह्न
→ दिन का अन्तिम भाग → अपराह्न
→ रात का मध्य भाग → निशीथ
→ सूर्योदय से पूर्व का समय → उषाकाल
→ प्रशंसा के बहाने निंदा करना → व्याजनिन्दा
→ निंदा के बहाने प्रशंसा करना → व्याजस्तुति
→ पर्वत का ऊपरी मैदानी भाग → अधित्यका
→ पर्वत का निचला मैदानी भाग → उपत्यका
→ जिसकी गहराई का पता न हो → अगाध
→ जो तत्काल कविता बना सकता है → आशुकवि
→ समुद्र में दो भू-भागों के सिरे मिलने का स्थान
जलडमरूमध्य
→ जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हो → आजानुबाहु
→ वह पत्र जो स्मरण दिलाने के लिए लिखा जाता है →
अनुस्मारक / स्मरण पत्र
→ वह कार्यालय-पत्र जो एकाधिक कार्यालयों में सूचनार्थ भेजा जाता है → परिपत्र
→ वह सूचना जो राजपत्र में प्रकाशित होती है → अधिसूचना
→ जो व्याकरण का रचयिता है → वैयाकरण
→ जो घास बेचकर अपना जीवन चलाता है → घसियारा
→ जो वाणी एवं मन की पहुँच से परे हो → अवाङ्मनस् सगोचर
→ अशुद्ध को शुद्ध करना → शुद्धीकरण
→ जो सदाचार से पवित्र हो गया हो → आचारपूत
→ बरतन बनाने का काम करने वाला → ठठेरा

23/04/20

- जिसकी बुद्धि कुश की नोक के समान तीखी है → कुशाग्र बुद्धि
- जो घर में वीरता दिखाता है → गेहेशूर
- जिसकी तोंद निकली हुई हो → तुन्दिल
- गोद लिया हुआ पुत्र → दत्तक
- अपनी पत्नी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र → औरस

शब्द

अधिक वर्णों के सार्थक ध्वनि समूह को

से → भारत, धर्मराज, अशोक, प्रियंका, राजस्थान, वसुन्धरा, भजनलाल, राकेश आदि।

शब्दों का वर्गीकरण → (4) भाग

(1) अर्थ के आधार पर
- (I) सार्थक शब्द → पर्याय, विलोम, युग्म
- (II) निरर्थक शब्द

(2) विकार के आधार पर
- (i) विकारी शब्द → संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया
- (ii) अविकारी शब्द → क्रिया विशेषण | सम्बन्ध बोधक | समुच्चय बोधक | विस्मयादि बोधक (निपात)

(3) उत्पत्ति के आधार पर →
- तत्सम
- तद्भव
- देशज
- विदेशी

(4) बनावट के आधार पर →
- रूढ़
- यौगिक
- योगरूढ़

श्री

Date ______
Page ______

25/03/25

अर्थ के आधार पर शब्द ② भेद होते हैं।

(1) सार्थक शब्द → वे शब्द जिनका कोई निश्चित अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं। → पर्यायवाची, विलोम, शब्दयुग्म, वाक्यांश के लिए एक शब्द आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

(2) निरर्थक शब्द → वे शब्द जिनका कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है जैसे → हमल, लचम आदि।

✡ विकार के आधार पर शब्द के ② भेद होते हैं →

(1) विकारी शब्द → वाक्य में प्रयोग करने पर जिन शब्दों के रूपों में लिंग|वचन|कारक|काल|पुरूष में परिवर्तन होता है विकारी शब्द कहलाते हैं जैसे → संज्ञा| सर्वनाम| विशेषण| क्रिया इसके अन्तर्गत आते हैं।

जैसे → लड़का → लड़की
मैं → हम
सुन्दर → सुन्दरता
पढ़ना → पढ़ाई

② अविकारी शब्द → वाक्य में प्रयोग करते समय इसका लिंग|काल|कारक|पुरूष|वचन में कोई परिवर्तन नहीं होता| अविकारी शब्द कहलाते हैं| इन्हे अव्यय भी कहा जाता है। क्रिया विशेषण|सम्बन्ध बोधक|समुच्चय बोधक| विस्मयादिबोधक शब्द इसके अन्तरगर्त आते हैं।

Note → निपात भी इसका एक भाग होता है।
जैसे → और, तथा, अथवा, या, किन्तु, परन्तु, लेकिन, आदि, जैसे, ऊपर, नीचे, तो ही, आदि।

श्री

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के (4) भेद होते हैं -

(1) तत्सम शब्द (तत् सम) →
संस्कृत भाषा के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में अपना लिए गए. तत्सम शब्द कहलाते हैं।
जैसे → हस्ति, वानर, कोकिल, अग्नि, नारीकेल आदि।

(2) तद्भव शब्द (→ संस्कृत भाषा के वे शब्द जो कुछ बदलते हुए रूप में हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे→ हाथी, बन्दर, कोयल, आग, नारि

(3) देशज शब्द → वे शब्द जो स्थानीय बोलियों से आकर हिन्दी भाषा में मिल गए हैं उन्हें देशज शब्द कहते हैं।
जैसे → लोटा, पेड़, झाड़ू, खिड़की, पगड़ी आदि।

(4) विदेशी शब्द → वे शब्द जो विदेशी बोलियों से आकर हिन्दी भाषा में मिल गए उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं → जैसे → मास्टर, डॉक्टर, फायदा, नुकसान, शा

✡ बनावट के आधार पर शब्द के (3) भेद होते हैं →

(1) रूढ़ शब्द → वे शब्द जो अन्य शब्दों के योग से मिलकर (न) बने हो तथा एक निश्चित अर्थ के लिए प्रसिद्ध हो गए जैसे → घोड़ा, पेड़, घर, कलम, आदि।

(2) यौगिक शब्द → दो सार्थक शब्दों के योग से बने शब्द, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे → सब्जीमा बैलगाड़ी, चिड़ियाघर, पुस्तकालय आदि।

(17)

02/04/25

शब्द शुद्धि

RAS - 2012

अनाधिकार → अनधिकार (अन् + अधि + कार)
चिन्ह → चिह्न | चिह्न
नुपुर → नूपुर (पायल)
प्रसंशा → प्रशंसा

RAS 2016 - 2017

संग्रहित → संगृहीत
निरोग → नीरोग
वापिस → वापस
मिस्ठान → मिष्टान्न (मीठा + अन्न)
श्रांगार → शृंगार
चिहन → चिह्न
अनुग्रहीत → अनुगृहीत
व्यावहारिक → व्यावहारिक **
आह्वान आह्वान
त्यौहार → त्योहार
दुरावस्था → दुरवस्था → दुर + अवस्था
गत्यावरोध → गत्यवरोध
प्रतिनीधि → प्रतिनिधि
विभीषण → विभीषण
मोलिक → मौलिक
उज्जवल उज्ज्वल

2018

मलयुद्ध → मल्लयुद्ध   स्थाइत्व → स्थायित्व
** महात्मय → माहात्म्य
कृत्यकृत्य → कृतकृत्य
अन्तेद्वंद्व → अन्तर्द्वंद्व
* अनुसांगिक → आनुषंगिक (क्रमानुसार)
पुनरावलोकन → पुनरवलोकन
तंदुरस्त → तंदुरुस्त *

02/04/25 2021

प्रज्जवलित → प्रज्वलित
गणमान → गण्यमान्य
भत्स्नी भर्त्सना **
नुपुर → नूपुर
चन्द्रमौली → चन्द्रमौलि
संग्रहित → संगृहीत
सुश्रुषा → शुश्रूषा **
** पश्चाताप पश्च्चाताप *** Q.17 (D)

2023 लब्धप्रतिष्ठीत → लब्धप्रतिष्ठ
अक्षुण्य → अक्षुण्ण
मिष्ठान्न → मिष्टान्न *
अहिल्या → अहल्या *

अनुदित → अनूदित *
आर्शिवाद → आशीर्वाद
भरतरी → भर्तृहरि *
भागिरथी → भागीरथी
कालीदास → कालिदास
वाल्मीकी → वाल्मीकि
नुपूर → नूपुर
अनुग्रहीत → अनुगृहीत
केबिनेट → कैबिनेट
अक्षोहिनी → अक्षौहिणी

* झोपंडी → झोपड़ी
त्योंहार — त्योहार
परलोकिक → पारलौकिक *
महगा → महँगा
छीण → क्षीण
कनिष्ठ → कनिष्ठ

02/04/25

मिष्ठान्न → मिष्टान्न
अंत्येष्ठि → अंत्येष्टि
अन्तर्ध्यान → अन्तर्धान **
अंताक्षरी → अंत्याक्षरी *

* वेदेही → वैदेही
सामर्थ → सामर्थ्य
कैलाश → कैलास
वेषभूषा → वेशभूषा
अविष्कार → आविष्कार *
कोसल्या → कौशल्या
कवित्री → कवयित्री
रचेता → रचयिता
भुजंगी → भुजंगी

वेश्य → वैश्य
वैश्या → वेश्या
शूर्पनखा → शूर्पणखा
नवरात्री → नवरात्र
व्यवहारिक → व्यावहारिक
मुरारी → मुरारि
याज्ञवल्क → याज्ञवल्क्य *
युधिष्ठर → युधिष्ठिर
लघुत्तर → लघूत्तर **

* पिशाचिनी → पिशाची, पुनरावलोकन → पुनरवलोकन
साप्ताहिक → साप्ताहिक, पैत्रिक → पैतृक
* स्वातंत्र → स्वातंत्र्य, भिखारिण → भिखारिन
उपनिवेशिक → औपनिवेशिक, प्रतिछवि → प्रतिच्छवि
इतिहासिक → ऐतिहासिक, पड़ौसी → पड़ोसी
पूज्यनीय → पूजनीय, न्यौछावर → न्योछावर
उज्जवल → उज्ज्वल, ज्योत्सना → ज्योत्स्ना *
* प्रज्जवलित प्रज्वलित, दवाईयों → दवाइयाँ
दुरावस्था → दुरवस्था, कृत्यकृत्य → कृतकृत्य
निरोग → नीरोग, गत्यावरोध → गत्यवरोध
* उच्छवास → उच्छ्वास

* मनोकामना → मनःकामना, आहूती → आहुति
सदोपदेश → सदुपदेश, ईर्ष्यालू → ईर्ष्यालु
निरपराधी → निरपराध, * इप्सित → ईप्सित
* हिरणाकश्यप → हिरण्यकश्यप, उज्जयनी → उज्जयिनी
त्रिमासिक → त्रैमासिक, श्रृंगार → शृंगार

J.B.B

औत्सुक्य → औत्सुक्य
कीरीट → किरीट
गिरस्थी → गृहस्थी
हुकुमत → हुकूमत
हुतासन → हुताशन
शुस्रुषा शुश्रूषा
सम्राज्य → साम्राज्य
सन्यासी → सन्यासी
विदूषी → विदुषी
शताब्दि → शताब्दी

* चिन्ह → चिह्न | चिह्न
लाजवती → लाजवंती
राजाभिषेक → राज्याभिषेक
मैथली → मैथिली
* महात्मय → माहात्म्य

दंपति → दंपती
ठुकराइन → ठकुराइन
घनिष्ट → घनिष्ठ
ग्रहस्थ → गृहस्थ
खिजूर → खजूर

मँहगाई → महँगाई
भागीरथी → भागिरथी
प्रोज्वल → प्रोज्ज्वल
* मारूति → मारुति
* प्रामाणिकरण → प्रमाणीकरण

तदोपरान्त → तदुपरान्त
पुर्नजन्म → पुनर्जन्म
पकोड़ी → पकौड़ी
नीतिवान → नीतिमान
दोगुना → दो गुना | दुगुना

केकई → कैकेयी
चाँदनी कुमुदनी → कुमुदिनी
कामनी → कामिनी
कलेश → क्लेश
* उपरोक्त → उपर्युक्त

उध्र्व → ऊर्ध्व
श्रृंखला → शृंखला
* आल्हाद → आह्लाद (प्रसन्न)
आद्रता → आर्द्रता
* आध्यातम → अध्यात्म

* अतिशयोक्ति → अतिश्य अतिशयोक्ति	कमलनी → कमलिनी
मद्ध्याह्न → मध्याह्न	अन्विती → अन्विति
प्रवर्तक → प्रवर्तक	आरण्य → अरण्य
अभ्यार्थना → अभ्यर्थना	अभ्योन्नति → अभ्युन्नति
सौन्दर्यता → सौन्दर्य	श्रीमति → श्रीमती

पत्नी → पत्नी	स्राष्टि → सृष्टि
अष्ठ → अष्ट	अपकीर्ति → अपकीर्ति
दृश्य → दृश्य	प्रातिष्टा → प्रतिष्ठा
जान्हवी → जाह्नवी	अस्प्रश्यता → अस्पृश्यता
अधोपतन → अधःपतन	परीणति → परिणति

**

रसायनिक → रासायनिक	वैशिष्टय → वैशिष्ट्य
जेष्ठ → ज्येष्ठ	सहस्त्र → सहस्र **
दीरघायु → दीर्घायु	प्रार्दुभाव → प्रादुर्भाव
नछत्र → नक्षत्र	अनुशंधान → अनुसंधान
अधिशाषी → अधिशासी	अभिग्य → अनभिज्ञ

पुनरुत्थाण → पुनरुत्थान	सुश्रूषा → शुश्रूषा *
आयुर्वेदिक → आयुर्वैदिक	निर्व्याक्तिकता → निर्वैयक्तिकता *
निमितिक → नैमितिक	जिजीविशा → जिजीविषा *
संश्लिष्ट → संश्लिष्ट	औपचारिकता → औपचारिकता
आरोग → आरोग्य	अगरगन्य → अग्रगण्य

सुसुप्ति → सुषुप्ति	चातुर्यता → चातुर्य
* सचिदानंद → सच्चिदानंद	स्वासथ → स्वास्थ्य
धातुष्मा → ध्रातुष्मा	रीत्यानुसार → रीत्यनुसार
पुरुस्कार → पुरस्कार	पित्रानुमति → पित्रनुमति
जिव्हा → जिह्वा	स्थाई → स्थायी

08/09/25

आधोगिकरण → औद्योगि~~कीकरण~~ करण	अनाधिकार → अनधिकार
आंकाक्षा → आकांक्षा	अहिल्या → ~~अहिल्या~~ अहल्या
औदार्य → औदार्य	शुद्धिकरण → शुद्धीकरण
आधीन → अधीन	वृद्धिकरण → वृद्धीकरण
अभ्यारण → अभयारण्य	प्रसंशा → प्रशंसा

दिवाली → दीवाली	विशिष्ठ → विशिष्ट
एकत्रित → एकत्र	प्रदर्शिनी → ~~प्रदर्शिनी~~ प्रदर्शनी
कृतग्य → कृतज्ञ	लावण्यता → लावण्य
माधुर्यता → माधुर्य	खोखिम → खोखिम
पुराणिक → पौराणिक	

J.B.B. (18) Date 29/04/25 Page

कारक

कारक	चिह्न / परसर्ग
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से (सहायता के द्वारा)
सम्प्रदान	के लिए
अपादान	से (अलग)
सम्बन्ध	का, की, के
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे, ओ, अरे।

परिभाषा → संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे उनका सम्बंध वाक्य के अन्य शब्द तथा क्रिया के साथ जाना जाए उसे कारक कहते हैं।

उदा० → चन्दू के चाचा ने चन्दू की चाची को चाँदनी चौक में चाँदी की चम्मच से चटनी चटाई।

(1) कर्ता कारक → कारक का वह रूप जिससे क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं इसका चिह्न 'ने' होता है जो भूतकाल के वाक्यों में ही कर्ता के साथ प्रयुक्त होता है, अन्य में नहीं।

जैसे → उमा ने पत्र लिखा।
उमा पत्र लिखती है।
उमा पत्र लिखेगी।
→ मोहन ने स्कूल में पुस्तक पढ़ी।
→ मैंने कल खाना खाया।

J.B.B. उत्तर प्राप्त होता है, वह कर्म कारक होगा।

30/04/25

→ रमेश ने भाई से झगड़ा किया।
→ मैंने कहा था कि उसने चोरी नहीं की।
→ तुमने इससे कुछ अलग सोचा।

Note → कर्ता के साथ किसी भी चिह्न का प्रयोग हो, वह हमेशा कर्ता कारक ही रहता है।

जैसे → हरीश को पाठ पढ़ना है।
→ बूढ़े व्यक्ति से चला नहीं जाता है।
→ डाकिया के द्वारा पत्र वितरित किये गये।
→ मुझे अवश्य जाना है।

(2) कर्म कारक → कारक का वह रूप जिस पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'को' होता है, जो अधिकांशतः गुप्त ही रहता है। अर्थात क्रिया से पहले आता है। दिखाई नहीं देता है।

जैसे → पहलवान दूध पीता है।
→ राधा ने गाना गाया।
→ कृष्ण ने अर्जुन को समझाया।
राम ने रावण को मारा।
→ मोहन ने नौकर को निकाल दिया।
→ माताजी बालक को समझाती है।
→ मोहन दूध पी रहा है।
→ मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
→ मैंने फल खाया।
→ कमला ने दर्पण में मुँह देखा।
→ उसने कविता सुनाई।
→ छोटू ने खेल दिखाया।

J.B.B
30/04/25

Date
Page

③ करण कारक → कारक का वह रूप जिससे क्रिया के साधन का बोध होता है। उसे करण कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'से' होता है जो सहायता या के द्वारा के भाव को व्यक्त करता है।

जैसे → मैं कलम से लिखता हूँ।
→ मोहन गेंद से खेलता है।
→ सोनु ने पेंसिल से चित्र बनाया।
→ वह कोरोना से मरा।

Note → 'के साथ' के योग में करण कारक होता है।
जैसे → सीता राम के साथ वन गई।
→ मैं पिताजी के साथ बाजार गया।
→ धर्मराज ने हाथ से चित्र बनाया।
→ उसे तार द्वारा सूचित कर दिया गया।
→ वह चम्मच से खाता है।
→ राम ने रावण को बाण से मारा।
→ मुझे पुत्र के द्वारा सूचना मिली।
→ मैंने प्यार के साथ उसे समझाया।
→ मैं कलम से लिखता हूँ।
→ राम ने कुल्हाड़ी से ~~पेड़~~ पेड़ काटा।
→ भिखारी नमक के साथ रोटी खा लेता है।
→ मैं आपको आँखों देखी खबर सुना रहा हूँ।

④ सम्प्रदान कारक → कारक का वह रूप जिसके लिए कर्ता काम करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'के लिए' होता है। जिसके स्थान पर अधिकांशत 'को' प्रदर्शित किया जाता है।
जैसे → पंडित ने भक्तों को कथा सुनाई।
→ राजा ने गरीबों को धन दिया।
→ मैंने पुलिस को चोर पकड़वा दिया।

30/04/25

→ संगीता ने राधा को पुस्तक दी।
→ लोग सूर्य को अर्घ्य देते है।
→ अपनी कलम दूसरों को मत दो।

Note → हेतु, वास्ते, निमित्त के योग मे सम्प्रदान कारक होता है। जैसे →
→ हम अध्ययन हेतु जयपुर रह रहे हैं।
→ आज का युवा रोजगार के वास्ते दर-दर भटक रहा है।
→ रमेश नौकरी निमित्त दिल्ली गया है।

(V) अपादान कारक → कारक का वह रूप जिससे वाक्य मे पृथकता (अलगाव) का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'से' होता है।

जैसे → पेड़ से पत्ता गिरा।
→ पहाड़ से पत्थर गिरा।
→ बालक छत से गिरा।
→ मोहन घर से विद्यालय गया।
→ आकाश से बिजली गिरी।
→ पेड़ से डाली टूट गई।
→ सुनील बस से उतर गया।
→ सिर से टोपी गिरी।

Note → भय, उत्पत्ति, ग्रहण, तुलना, लज्जा के भावो मे अपादान कारक होता है।

जैसे → पुजारी कुत्ते से डरता है।
→ गंगा हिमालय से निकलती है।
→ छात्र गुरु से शिक्षा ग्रहण करता है।
→ राम श्याम से चतुर है।
→

J.B.B.
30/04/25

बहू ससुर से लजाती है।

(VI) सम्बंध कारक → कारक का वह रूप जिससे उसका सम्बंध वाक्य के अन्य संज्ञा। सर्वनाम से दिखाया जाए, उसे सम्बंध कारक कहते हैं। इसके चिह्न → 'का', 'की', 'के' होता है।

जैसे → धर्मराज के कपड़े स्वच्छ हैं।
→ राम और उसका पुत्र व्यस्त हैं।
→ आपकी माता जयपुर जा रही हैं।
→ मेरा घर सड़क के उस पार है।
→ वह सुमित का भाई है।
→ यह महेश की पुस्तक है।
→ राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
→ कश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्वितीय है।
→ मोहन के पिताजी आ रहे हैं।
→ तुम्हारे कपड़े अच्छे हैं।

विशेष → संबंध कारक के द्वारा अवस्था, नाते-रिश्ते, माप, स्वामित्व, कारण-कार्य, कर्त्ता-कर्म, जनक-जन्य आदि अनेक सम्बंध सूचित करते हैं।

→ यह बीस बरस का युवक है। (अवस्था का बोध)
→ राम श्याम का भाई है। (नाते-रिश्ते का बोध)
→ मेरे पास आठ एकड़ जमीन है। (माप का बोध)
→ राहुल गाँधी राजीव गाँधी के पुत्र हैं। (जनक-जन्य)
→ यह अँगूठी चाँदी की है। (कारण-कार्य)

J.13.13.
20/04/25

Classmate
Date
Page

(7) अधिकरण कारक → कारक का वह रूप जिससे क्रिया के होने के स्थान का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'में', 'पर' होता है।

जैसे → खेत में क्या बोया है?
→ कुए पर कौन पानी भर रहा है?
→ बच्चे छत पर खेल रहे हैं।
→ बंदर डाल पर बैठा है।
→ अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।
→ घर-घर में शोर मच गया।
→ बच्चे छत पर कूद रहे हैं।
→ मेरी घड़ी में चार बज गए हैं।

→ मैं एक घण्टे में घर जाऊँगा।
→ शीतल हिमालय की चोटी पर चढ़ी।
→ शेर जंगल में रहता है।
→ बच्चा बिस्तर पर सोया है।
→ परीक्षा मार्च में होगी।

Note → के अन्दर, के ऊपर, भीतर, बाहर, मध्य के योग में अधिकरण कारक होता है।

जैसे → कमरे के अन्दर कोई रो रहा है।
→ छत के ऊपर मोर नाच रहा है।

(7) सम्बोधन कारक → कारक का वह रूप जिससे किसी को बुलाया अथवा पुकारा जाए, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। इसका चिह्न 'हे', 'ओ', 'अरे' होता है।

J. B/D
30/04/25

→ अरे मोहन! इधर आओ।
→ अरे मूर्ख! तूने शिवजी का धनुष तोड़ दिया।
→ अरे लड़के! वहाँ क्यों खड़े हो।
→ हे भगवान! तू सबकी रक्षा कर।
→ सज्जनों और देवियों! चुप हो जाओ।
→ हे भगवान! मेरी रक्षा कर।
→ अजी भाई साहब! बात सुनते जाइए।
→ अरे बेटे! तुम कहाँ जा रहे थे?
→ भाइयों-बहनों! मैं जा रहा हूँ।

23/04/25

Date ______
Page ______

लिंग

**

* लिंग का शाब्दिक अर्थ → चिह्न, पर व्याकरण में यहाँ लिंग शब्द पुरुष या स्त्री जाति के बोधक रूप में स्वीकार किया गया है। अर्थात् शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष अथवा स्त्री जाति का है, उसे लिंग कहते हैं।

→ हिंदी में लिंग के (2) भेद होते हैं।

(i) पुल्लिंग (ii) स्त्रीलिंग

(1) पुल्लिंग → शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष जाति में होने का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं।
जैसे → दादा, चाचा, शेर, मोर, राजपूत आदि।

2) स्त्रीलिंग शब्द → के जिस रूप से रूप से उसके स्त्री जाति में होने का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे → दादी, बहन, चाची, शेरनी, मोरनी, राजपूतनी

लिंग निर्णय सम्बन्धी नियम

→ हिन्दी में लिंग → भेद की दृष्टि से तीन प्रकार के शब्द हैं।

1) → ऐसे शब्द जो शारीरिक संरचना के आधार पर पुरुष अथवा स्त्री जाति के हैं। जैसे → शेर - शेरनी, नर-नारी ऊँट - ऊँटनी।

2.) दूसरे प्रकार के वे शब्द हैं, जिन्हें परम्परा और प्रचलन के आधार पर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में मान लिया गया जैसे → कौवा, भेड़िया, गीदड़ (पु.)

23/04/25

मकड़ी, कोयल, मक्खी (स्त्री)

नित्य पुल्लिंग शब्द → उल्लू, कौआ, तोता, कौआ, गेंडा, खटमल, खरगोश, पशु, मच्छर, भेड़िया, कछुआ, बिच्छू, चीता आदि।

नित्य स्त्रीलिंग शब्द → मछली, मकड़ी, मक्खी, मैना जोंक, गिलहरी, कोयल, भेड़, बुलबुल, चील, तितली दीमक, आदि कुछ प्राणिवाचक शब्द होते हैं, जिनका प्रयोग केवल स्त्रीलिंग में ही होता है।
→ सौत, संतान, सुहागिन, सखी, नर्स, धाय, सवारी

(3) तीसरे प्रकार के अप्राणिवाचक शब्द हैं, जिनके लिंग निर्धारण का कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। लेकिन परम्परा, प्रचलन और प्रयोग के आधार पर हम उनका लिङ्ग निर्धारण कर सकते हैं।
→ जिनके लिंग भेद की जानकारी हमें शब्दकोश से मिल सकती है। या प्रयोग के द्वारा।

→ अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग भेद के सम्बंध में कुछ ~~सर्वनाम~~ सर्वमान्य संकेत दिए जा रहे हैं, इसके साथ अपवाद भी है।

★ पुल्लिङ्ग संज्ञाएँ

(क) शरीर के अंगों के नाम → कान, मुँह, गाल, मस्तक, अंगूठा, होंठ
अपवाद → कलाई, जीभ, हड्डी, नस, बाँह, जाँघ, टाँग
(ख) वृक्षों और फलों के नाम → केला, देवदार, अशोक, नींबू, संतरा, नीम
अपवाद → नाशपती, लीची, इमली।

J.B.B.
23/04/25

→ देश तथा जल-स्थल विभागों के नाम → सरोवर, सागर, प्रांत, देश, द्वार, नगर, रेगिस्तान।
अपवाद → पृथ्वी, झील, नदी, घाटी।

(घ) रत्नों के नाम → हीरा, नीलम, मोती, माणिक्य
अपवाद → मणि

(ङ) अनाजों के नाम → गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, तिल, जौ, गन्ना।
अपवाद → मक्का, मूँग, ज्वार, अरहर, सरसों।

(च) द्रव पदार्थों के नाम → तेल, शर्बत, दूध, रस
अपवाद → चाय, शराब, स्याही, छाछ

(छ) पर्वतों के नाम → हिमालय, विंध्याचल, हिंदूकुश
अपवाद → अरावली

(ज) धातुओं के नाम → सोना, लोहा, ताँबा, शीशा, टीन
अपवाद → चाँदी

(झ) महीनों और दिनों के नाम → चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, अगहन, पूस, माघ, फाल्गुन, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर।
अपवाद → जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई।

(ञ) ग्रह नक्षत्रों के नाम → सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, तारा, ध्रुव।
अपवाद → पृथ्वी।

(ट) समुद्र का नाम → हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अंध महासागर

23/04/25

→ आव, पन, आपा, त्व, आवा, प्रत्ययों वाली भाववाचक संज्ञाएँ पुल्लिंग होती हैं।

आव → लगाव, बहाव, चढ़ाव, बचाव, फैलाव, प्रभाव।

आपा → बुढ़ापा, रँडापा, मोटापा, पुजापा।

त्व → महत्त्व, तत्त्व, कवित्व, स्वत्व, मनुष्यत्व

आवा → चढ़ावा, दिखावा, पहनावा

(5) समय → विभाग के नाम भी प्रायः पुल्लिंग होते हैं,
→ वर्ष, महीना, दिन, घंटा, मिनट, सैकिंड, पल क्षण, प्रभात, दोपहर, सप्ताह।
अपवाद → रात, साँझ, घड़ी।

24/04/25

स्त्रीलिंग संज्ञाएँ

क) नदियों के नाम → प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।
जैसे → गंगा, यमुना, गोदावरी, महानदी, नर्मदा, ताप्ती।
अपवाद → ब्रह्मपुत्र, सिंधु, सतलुज, व्यास, चिनाब

(ख) किराने की वस्तुओं के नाम प्रायः →
→ इलायची, दाल, चीनी, सुपारी, मिर्च, हल्दी
अपवाद → लौंग, जीरा, धनिया, नमक, गरम मसाला

(ग) भोज्य पदार्थों के नाम: भी स्त्री होते हैं,
→ पूड़ी, कचौड़ी, तरकारी, खिचड़ी, पकौड़ी
अपवाद → पराठा, भात, रायता, हलवा, दही।

J.13.19
24/04/25

(घ) वस्त्रों के नाम → स्त्रीलिंग होते हैं।
→ जाँघिया, बनियान, चुनरी, पगड़ी, धोती
अपवाद → कोट, पाजामा, कुर्ता, दुपट्टा।

(ङ) आभूषणों के नाम → भी स्त्रीलिंग होते हैं।
→ झालर, टिकली, पायल, अँगूठी, चूड़ी।
अपवाद → बिछुआ, कंगन, कड़ा, झुमका, झूमर

(च) आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत संज्ञाएँ भी प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं।
जैसे → आकारांत → दया, प्रार्थना, पूजा, परीक्षा, लता, माला
अपवाद → लड़का, कुत्ता, बुड्ढा।

→ इकारान्त → बुद्धि, रुचि, शक्ति, भक्ति, छवि,
अपवाद → कवि, रवि।

→ ईकारान्त → गठरी, नदी, तितली, चिट्ठी, साड़ी, सगाई, बिदाई
अपवाद → स्वामी, मोती, दही, घी, पानी।

उकारांत → वस्तु, वायु, गहतु, मृत्यु
अपवाद → साधु, बाहु, भानु।

ऊकारांत → तराजू, लू, बालू, झाड़ू, वधू, बहू।
अपवाद → आलू, आँसू, लट्टू, भालू।

(छ) तिथियों के नाम → दूज, तीज, द्वितीय, तृतीया, चतुर्थी, अष्टमी, एकादशी।

(ज) तकारान्त, सकारान्त संज्ञाएँ भी प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं
जैसे → तकारान्त → बात, रात, लता, छत।

24/04/25

अपवाद → गीत, जीत, भात, खेत, व्रत, विश्वास

सकारांत → मिठास, प्यास, आस, घास।

(ख) आई, हट, वट से समाप्त होने वाली संज्ञाएँ भी प्रायः स्त्रीलिंग होती हैं।
→ राख, भीख, सीख, चीख
आई → भलाई, बुराई, अच्छाई, ऊँचाई

→ हट, वट → आहट, घबराहट, चिकनाहट, बनावट
ता → दासता, स्वतंत्रता, परतंत्रता, स्वाधीनता

भाषाओं के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं -
→ हिन्दी, मराठी, गुजराती, असमिया, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच

(ट) इया से समाप्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।
→ खटिया, चिड़िया, दुखिया, बढ़िया, पुड़िया, डुबिया, बिंदिया

अपवाद → डाकिया, भेदिया, भेड़िया, गड़रिया।

☆ 'आ' प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग बनाना

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बाल	बाला
प्रिय	प्रिया
कृष्ण	कृष्णा
भवदीय	भवदीया
पूज्य	पूज्या
शिव	शिवा
मूर्ख	मूर्खा
अनुज	अनुजा
तनय	तनया
चंचल	चंचला
सुत	सुता

24/04/25

② 'ई' प्रत्यय जोड़कर

पु.	स्त्री
नर	नारी
बकरा	बकरी
बच्चा	बच्ची
देव	देवी
दादा	दादी
नाना	नानी
मामा	मामी
मौसा	मौसी
चींटा	चींटी
हरिण	हरिणी

③ 'इया' प्रत्यय जोड़कर

लोटा → लुटिया
डिब्बा → डिबिया
बंदर → बंदरिया
मुन्ना → मुनिया
बछड़ा → बछड़िया
बेटा → बिटिया

'नी' प्रत्यय जोड़कर

चोर → चोरनी
शेर → शेरनी
ऊँट → ऊँटनी
भाट → भाटनी
डॉक्टर → डॉक्टरनी
भील → भीलनी
मजदूर → मजदूरनी

'आइन' प्रत्यय जोड़कर

पंडित → पंडिताइन
चौधरी → चौधराइन
बनिया → बनियाइन
चौबे → चौबाइन
ओझा → ओझाइन
दूबे → दुबाइन

'इन' प्रत्यय जोड़कर

नाग → नागिन
मालिक → मालकिन
नाती → नातीन नातिन
पापी → पापिन
जुलाहा → जुलाहिन
माली → मालिन
सुनार → सुनारिन
दर्जी → दर्जिन
कुम्हार → कुम्हारिन

'इनी' 'इणी' प्रत्यय से

हंस → हंसिनी
हाथी → हथिनी
यशस्वी → यशस्विनी
वनवासी → वनवासिनी
स्वामी → स्वामिनी
अभिमानी → अभिमानिनी

J.B.P

Date ____
Page ____

(9) 'इका' जोड़कर

→ नायक → नायिका
अध्यापक → अध्यापिका
सेवक → सेविका
संपादक → संपादिका
परिचालक → परिचालिका
संचालक → संचालिका
सहायक → सहायिका
निवेदक → निवेदिका

'ता' से 'त्री' करके

दाता → दात्री
विधाता → विधात्री
नेता → नेत्री
वक्ता → वक्त्री

(11) 'मान' और 'वान' को क्रमश: मती और वती करके

→ श्रीमान → श्रीमती
महान → महती
ज्ञानवान → ज्ञानवती
कीर्तिमान → कीर्तिमती
आयुष्मान → आयुष्मती
धनवान → धनवती
सत्यवान → सत्यवती
बलवान → बलवती।

* कुछ पुल्लिंग शब्दों के सर्वथा भिन्न स्त्रीलिंग रूप।

पिता → माता
पति → पत्नी
बैल → गाय
लोग → लुगाई
विधुर → विधवा
विद्वान → विदुषी
सम्राट → सम्राज्ञी
मियाँ → बीवी

CLASSMATE

Date 28|04|25

Page

(21)

काल

—*—

→ क्रिया के जिस रूप से कार्य के सम्पन्न होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

जैसे→ राम ने खाना खाया।
राम खाना खाता है।
राम खाना खायेगा।

काल के भेद

(1) भूतकाल
→ सामान्य भूतकाल
→ अपूर्ण भूतकाल
→ पूर्ण भूतकाल
→ आसन्न भूतकाल
→ ~~सन्धि~~ सन्दिग्ध भूतकाल
हेतु हेतु मद भूतकाल

2 वर्तमान काल
1) सामान्य वर्तमान काल
2 अपूर्ण वर्तमान काल
3 संदिग्ध वर्तमान काल

3) भविष्य काल
→ सामान्य भविष्य काल
→ संदिग्ध भविष्य काल
→ हेतु हेतु मद भविष्य काल

J.B.B.

(I) भूतकाल → क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया बीते हुए समय में हुई थी, उसे भूतकाल कहते हैं।

जैसे → वह पत्र लिख रहा था।
राम ने खाना खा लिया है।

→ इसके छः भेद होते हैं -

(i) सामान्य भूतकाल → क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में उसके सामान्य रूप से होने का बोध होता है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।
जैसे → मोहन ने खाना खाया।
→ सीता ने गाना सुनाया।
→ पहलवान ने दूध पीया।

(ii) अपूर्ण भूतकाल → क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, पूरी नहीं हुई, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।
जैसे → वे नाटक देख रहे थे।
→ राधा कपड़े धो रही थी।
→ कविता गाना गा रही थी।

iii) पूर्ण भूतकाल → क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में बहुत पहले ही पूरी हो गई थी, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे → रहीम ने पुस्तक पढ़ ली थी।
→ माताजी ने खाना बना लिया था।
→ छात्रों ने गृहकार्य कर लिया था

Date 29/04/21
Page

IV) आसन्न भूतकाल → क्रिया का वह रूप जिसमे यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूरी हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे → माँ ने खाना बना लिया है।
→ मैंने खाना बना लिया है।
→ मैंने जलेबी खा ली है।

(5) संदिग्ध भूतकाल - क्रिया का वह रूप जिससे उसके भूतकाल मे होने पर संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं। जैसे →
→ रमेश जयपुर पहुँच गया होगा।
→ माताजी ने गृह कार्य कर लिया होगा।

(6) हेतु हेतु मद भूतकाल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके भूतकाल मे होने के कारण का बोध होता है, उसे हेतु हेतु मद भूतकाल कहते है।
जैसे → यदि बरसात अच्छी होती तो फसल भी अच्छी होती।
→ यदि छात्र पढ़ते तो S.I. मे चयन हो जाता।
→ यदि उसके पास पैसे होते तो वह पुस्तक खरीद लेता।

|| वर्तमान काल ||

→ क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि क्रिया अभी हो रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

* इसके तीन भेद होते हैं।

(1) सामान्य वर्तमान काल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके वर्तमान काल मे सामान्य रूप

से होने का बोध होता है उसे सामान्य वर्तमान काल काल कहते है।

जैसे → मैं घर जाता हूँ।
राधा गाना गाती है।
हम खेलते है।

② अपूर्ण वर्तमान काल → क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि क्रिया वर्तमान काल में चल रही है, पूरी नही हुई है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे → मजदूर काम कर रहे हैं।
छात्र लोकउाउब में भी पढ रहे हैं।
→ माताजी खाना बना रही है।

③ सन्दिग्ध वर्तमान काल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके वर्तमान काल में होने पर सन्देह हो, उसे सन्दिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे → छात्र पढ रहा होगा।
माताजी खाना बना रही होगी।
→ धर्मराज हरसाखा हरसाणा गाना गा रहा होगा।

भविष्य काल

→ क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा यह पता चले कि क्रिया आने वाले समय में होगी, उसे भविष्य काल कहते हैं।

Date 29/04/25

* इसके तीन भेद होते हैं।

(i) सामान्य भविष्य काल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके भविष्य काल में सामान्य रूप से होने का बोध होता है, उसे सामान्य भविष्य काल कहते हैं।

जैसे → राम बाजार जाएगा।
→ हम घूमने जाएंगे।
→ सीता गाना गायेगी।

ii) संदिग्ध भविष्यकाल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके भविष्य काल में होने पर संदेह हो, उसे संदिग्ध भविष्यकाल कहते हैं।

जैसे → शायद आज मूसलाधार बरसात हो।
→ हो सकता है मेरा भी SI में चयन हो जाए।
→ शायद राजस्थान रॉयल IPL जीत जाए।

(iii) हेतु हेतु मद भविष्यकाल → क्रिया का वह रूप जिससे उसके भविष्यकाल में होने के कारण का भी बोध होता है, उसे हेतु हेतु मद भविष्य काल कहते हैं।

जैसे → यदि छात्र पढ़ेंगे तो SI में भी चयन हो जाएगा।
→ यदि बरसात अच्छी होगी तो फसल भी अच्छी होगी।
→ यदि खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करेंगे तो जीत जायेंगे।

02/05/25

(22)

वृत्ति

→ वृत्ति का शाब्दिक अर्थ होता है → मन स्थिति

↳ क्रिया के जिस रूप से वक्ता अथवा लेखक के मन की स्थिति का बोध होता है, उसे वृत्ति कहते हैं

जैसे → आपका जीवन सुखी रहे।
→ लगभग 50% मतदान होगा।
→ यदि बरसात अच्छी होती तो फसल भी अच्छी होती।
→ रमेश दूध ला रहा होगा।
→ अध्यापक पढा रहा है।

→ वृत्ति के भेद (5)

(1) आज्ञार्थक / विध्यर्थ वृत्ति
2) निश्चयार्थ वृत्ति
3) सम्भावनार्थ वृत्ति
4) सदेहार्थ वृत्ति
5) संकेतार्थ वृत्ति

(1) आज्ञार्थक / विध्यर्थ वृत्ति → जिस क्रिया रूप से आज्ञा, अनुरोध, इच्छा, आदेश आदि मनः स्थितियों का बोध हो, उसे आज्ञार्थक कहते हैं

जैसे → मेरी पुस्तक लाओ (आदेश)
कृपया समय बताइए (अनुरोध)
आपका जीवन सुखी रहे (इच्छा)
सदैव सच बोलना चाहिए। (उपदेश)
एक-एक गिनकर बताओ (विधि)

J.B.B.
02/05/25

(2) निश्चयार्थ वृत्ति → जिस क्रिया रूप से कार्य के होने की निश्चितता का बोध होता है, उसे निश्चयार्थ वृत्ति कहते हैं।
जैसे → मोहन पढ़ रहा है।
राम बाजार जा रहा है।
बृजेश जयपुर पहुँच गया।
→ मुख्यमंत्री जयपुर चार बजे पहुँचेंगे।

(3) सभावनार्थ वृत्ति → क्रिया के जिस रूप से अनुमान, संभावना आदि का बोध होता है, उसे सभावनार्थ वृत्ति कहते हैं।

जैसे → लगभग 40% मतदान होगा।
शायद मोहन प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो जाए।
सम्भवतः आज धूप निकले।
शायद इंडिया विश्व कप जीत जाए (अनुमान)
हो सकता है आज मूसलाधार बारिश हो (संभावना)

(4) सदेहार्थ वृत्ति → संभावना कभी-कभी अधिक होती अर्थात कथन पूरी तरह सत्य होगा या नहीं ऐसी स्थिति में संदेहार्थ का प्रयोग किया जाता है। अर्थात किसी कार्य के होने पर सन्देह व्यक्त किया जाता है।

जैसे → मुकेश दूध ला रहा होगा।
राम स्कूल पहुँच गया होगा।
→ माताजी ने खाना बना लिया होगा।
→ गुरुजी विद्यालय पहुँच गये होंगे।

J.B.B.

Date
Page

02/05/25

(5) संकेतार्थ वृत्ति → जिस वाक्य में क्रियाएँ इस प्रकार संयुक्त होती है कि एक क्रिया के लिए कारण बनकर प्रस्तुत होती हैं, वहाँ संकेतार्थ होता है। अर्थात क्रिया के होने का कारण भी बताया जाता है। संकेतार्थ या हेतु वृत्ति कहते हैं।

जैसे → यदि छात्र पढेंगे तो S.I. भी बन जाएंगे।
यदि आप चलते तो मैं भी चल लेता।
वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।
→ बारिश होगी तो हम भी पिकनिक चलेंगे।

02|05|25

Date
Page

J.B.B.

पक्ष

—*—

सहायक क्रिया के वे अंश जो क्रिया की पूर्णता, अपू अपूर्णता, किसी व्यक्ति या वस्तु की अवस्था या स्थिति आदि का बोध कराते हैं, उसे पक्ष कहते

अर्थात्

प्रत्येक कार्य किसी कालावधि के बीच होता है जो आरम्भ से अन्त तक फैला होता है। इस कालावधि को ही पक्ष कहते हैं।

जैसे→ बालक चलने लगा है।
मेले में भीड़ बढ़ती जा रही है।
माताजी खाना बना चुकी हैं।

पक्ष के भेद → (6)

(1) आरम्भ बोधक पक्ष
(II) सातत्य बोधक पक्ष
(III) प्रगति बोधक पक्ष
(IV) पूर्णता बोधक पक्ष
V) नित्यबोधक (स्थित्यात्मक) पक्ष
6) अभ्यास बोधक पक्ष

(1) आरंभद्योतक पक्ष → इसमें क्रिया के आरम्भ होने की सूचना मिलती है।

जैसे→ बालक लिखने लगा है।
वह पढ़ने लगा है।
बच्चा चलने लगा है।
मोहन नोकरी करने लगा है।

12/05/25

Date
Page

(2) सातत्य बोधक पक्ष → इससे यह सूचना मिलती है कि क्रिया की प्रक्रिया वर्तमान में चल रही है।

जैसे → अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है।

→ खिलाड़ी अच्छा खेल दिखा रहे हैं।

→ राधा लिख रही है।

→ इसका प्रयोग भूतकाल में भी होता है।

→ सीता लिख रही है।थी।

वायुयान उड़ रहा था।

(3) प्रगतिबोधक पक्ष → इसमें क्रिया में निरंतर प्रगति का बोध होता है।

जैसे → मेले में भीड़ बढ़ती जा रही है।

बाँध में पानी भरता जा रहा है।

वह तेजी से चलता आ रहा है।

विराट तेजी से शतक की ओर बढ़ रहा है।

(4) पूर्णताद्योतक पक्ष → इसमें क्रिया के पूर्ण होने का बोध मिलता है।

जैसे → मैंने पुस्तक पढ़ली है।

माताजी खाना बना चुकी है।

मोहन ने गृहकार्य पूरा कर लिया है।

खाना बन गया है।

5) नित्यबोधक पक्ष (स्थित्यात्मक पक्ष) - इसमें क्रिया के नित्य (सदा बनी रहने) का बोध होता है।

जैसे → पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।

सूरज पूर्व दिशा में उदय होता है।

मोहन अध्यापक है।

पहलवान कसरत करता है।

J.B.B.
02/05/25

→ इसमें किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति या अवस्था का बोध होता है। अतः इसे स्थित्यात्मक पक्ष भी कहते हैं। यह वर्तमान काल तथा भूतकाल दोनों में हो सकता है।

जैसे → राधा अध्यापिका है। → वर्तमान काल
राधा अध्यापिका थी। → भूतकाल

2. बिल्ली रसोई में है। → वर्तमान काल
बिल्ली रसोई में थी। → भूतकाल

3. किताब मेज पर है। → वर्तमानकाल
किताब मेज पर थी। → भूतकाल

⑥ अभ्यासद्योतक पक्ष → इसमें पता चलता है कि आदत (स्वभाव) के कारण (अभ्यास से) हुआ करती

→ मैं प्रातः उठकर टहलने जाता हूँ।
→ मोहन रोज प्रातः उठता है और मंदिर जाता है।
→ राधा प्रायः गाने सुना करती है।

18/04/25

वाच्य

→ वाच्य का अर्थ होता है → बोलने का बिषय।

→ क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि बोलने का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है। उसे वाच्य कहते है

जैसे → शेर दहाड़ता है।
पहलवान के द्वारा दूध पीया जाता है।
रोगी से बैठा नहीं जाता है।

वाच्य के भेद (तीन)
(1) कर्तृ वाच्य → अकर्मक + सकर्मक
2) कर्म वाच्य → के द्वारा + सकर्मक
3) भाव वाच्य → से + अकर्मक (पु॰ + एकवचन)

कर्तृ वाच्य → वह वाक्य जिसमें वाच्य बिन्दु कर्ता होता उसे कर्तृ वाच्य कहते है।

→ इसमें कर्ता की प्रधानता होती है।
→ क्रिया के लिंग, वचन व पुरुष कर्ता के अनुसार होते है
→ इसमे अकर्मक व सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग होता है।

जैसे → शेर दहाड़ता है।
→ मछलियाँ पानी मे तैरती है।
→ लड़कियाँ चुप नहीं रहती है।
पहलवान दूध पीता है।
→ मोहन पुस्तक पढ़ता है।
→ राधा पत्र लिखती है।
→ राधा चिट्ठी लिखती है।
→ रमेश पतंग नहीं उड़ाता है।

Date
Page

18/04/25

② कर्म वाच्य → वह वाक्य जिसमें वाच्य बिन्दु कर्म होता है। उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

→ इसमें कर्म की प्रधानता होती है।

→ क्रिया के लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं।

→ कर्ता के साथ अधिकांशतः के द्वारा, शब्दों का प्रयोग होता है।

→ हमेशा सकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है।

जैसे → पहलवान के द्वारा दूध पीया जाता है।
मोहन के द्वारा पुस्तकें पढ़ी जाती हैं।
राधा के द्वारा पत्र लिखा जाता है।
राधा के द्वारा चिट्ठी लिखी जाती है।
रमेश के द्वारा पतंग नहीं उड़ाई जाती है।
दिनेश के द्वारा केले खरीदे गए।

Note → वाक्य में कभी-कभी कर्ता गौण रहता है।
→ चिट्ठी भेजी गई।
पत्र लिखा गया।
पतंग उड़ाई जाती है।
दूध पीया जाता है।

③ भाव वाच्य → वह वाक्य जिसमें वाच्य बिन्दु भाव होता है। उसे भाव वाच्य कहते हैं।

→ इसमें भाव की प्रधानता होती है।

→ कर्ता के साथ अधिकांशतः से का प्रयोग होता है।

→ अधिकांशत उदाहरण नकारात्मक होते हैं।

→ हमेशा अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है।

जैसे → रोगी से बैठा नहीं जाता है।
→ बूढ़े व्यक्ति से चला नहीं जाता है।
→ लड़कियों से चुप नहीं रहा जाता है।

18/04/2

→ मछलियों के द्वारा पानी में तैरा जाता है।
→ शेर के द्वारा दहाड़ा जाता है।

Note(1) कर्तृ वाच्य के अकर्मक क्रिया के सभी उदाहरणों को भाव वाच्य में तथा सकर्मक क्रिया के सभी उदाहरणों को कर्म ~~वाच्य~~ वाच्य में बदला जा सकता है।

Note(2) कर्तृ वाच्य का वाक्य जिस काल में होता है, वाच्य परिवर्तन के बाद भी उसी काल में रहता है।

जैसे →
डाकिया ने पत्र वितरित किए।
→ डाकिया के द्वारा पत्र वितरित किए गए।

→ डाकिया पत्र वितरित करता है।
→ डाकिया के द्वारा पत्र वितरित किए जाते हैं।

→ डाकिया पत्र वितरित करेगा।
→ डाकिया के द्वारा पत्र वितरित किए जायेंगे।

J.B.B. (23) 09/04/25

वाक्य

सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जो किसी भाव या विचार को पूरी तरह से व्यक्त करता है। उसे वाक्य कहते हैं।

जैसे → सचिन चाँद की ओर देख रहा है।

* वाक्य के अंग या अवयव (2)

(i) उद्देश्य (ii) विधेय

उद्देश्य → वाक्य में जिस विषय या वस्तु के बारे में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। इसे कर्ता भी कहा जाता है। कर्ता का विशेषण उद्देश्य का विस्तार कहलाता है।

विधेय → वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ भी बताया जाता है। उसे विधेय कहते हैं। इसे क्रिया भी कहा जाता है। कर्ता व क्रिया के मध्य का भाग विधेय का विस्तार कहलाता है।

जैसे → सोहन पुस्तक पढ़ता है।

सोहन → उद्देश्य; पुस्तक → विधेय का विस्तार; पढ़ता है → विधेय

→ जंगल का राजा शेर दहाड़ता है।

जंगल का राजा → उद्देश्य का विस्तार; शेर → उद्देश्य; दहाड़ता है → विधेय

→ विश्व के महान बल्लेबाज तेन्दुलकर ने एक ओवर में पाँच छक्के लगाए

विश्व के महान बल्लेबाज → उद्देश्य का विस्तार; तेन्दुलकर ने → उद्देश्य; एक ओवर में पाँच छक्के → वि० का विस्तार; लगाए → विधेय

09/04/25

* भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, पं जवाहरलाल नेहरू ने, स्वतंत्रता संग्राम में प्रमु...

उद्देश्य का विस्तार उद्देश्य विधेय का विस्तार

वाक्य के भेद (2)

रचना की दृष्टि से (3)
1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य

अर्थ की दृष्टि से (8)
1. विधानवाचक
2. निषेधात्मक
3. आज्ञार्थक वाक्य
4. प्रश्न वाचक
5. विस्मयादि वाचक
6. इच्छा वाचक
7. सन्देह वाचक
8. संकेत / हेतु वाचक

* रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं।

(1) सरल वाक्य → वह वाक्य जिसमें एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है। या एक ही क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।
जैसे → पहलवान दूध पीता है।
राम और श्याम, पुस्तक पढ़ते हैं।

(2) संयुक्त वाक्य → वह वाक्य जिसमें दो वाक्य या उपवाक्य स्वतन्त्र रूप से किसी योजक शब्द द्वारा जुड़े होते हैं। उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य में अधिकांशतः और, तथा, अथवा, या, किन्तु, परन्तु, लेकिन, आदि योजक शब्दों का प्रयोग

09/04/25

लिया किया जाता है जैसे →

गणेश बुद्धिमान है, परन्तु ईमानदार नहीं।

हम आए और तुम चल दिए

③ मिश्रित वाक्य → वह वाक्य जिसमें एक वाक्य प्रधान हो और दूसरा उस पर आश्रित या उसका कारण रहा हो। उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।
जैसे → मैं प्रसन्न हूँ कि आपका चयन SI में हो गए

2. यदि वह पढ़ता तो आज उसकी यह दुर्दशा नहीं होती।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद (8)

① विधानवाचक → इसमें किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है।
जैसे → रमेश पतंग उड़ाता है।
2. हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।

② निषेध वाचक → इसमें नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग होता है।
जैसे → मोहन विद्यालय नहीं जाता है।
→ आजकल छात्र समय पर गृहकार्य नहीं कर रहे हैं

③ आज्ञार्थक वाक्य → इसमें किसी कार्य को करने की आज्ञा या आदेश दिया जाता है।
जैसे → राशन की दुकान से चीनी लाओ।
→ तुम अपना पाठ याद करो।

Date
Page

09/04/25

(4) प्रश्नवाचक वाक्य → इसमें प्रश्नवाचक वाक्यों का प्रयोग होता है, तथा अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे → राम कहाँ जा रहा है ?
→ तुम किससे मिलने आए हो ?

(5) विस्मयादि बोधक वाक्य
आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा, आदि भावों को व्यक्त किया जाता है।

जैसे → शाबाश बेटा ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।
छि : छि : ! आप इतना गंदा पानी पीते हैं।

(6) इच्छा वाचक → इसमें किसी कार्य के पूरा होने की इच्छा व्यक्त की जाती है।

जैसे → भगवान करे मेरा SI में चयन हो जाए।
↳ आपका दिन मंगलमय हो।

(7) सन्देह वाचक → इसमें किसी कार्य के होने पर सन्देह व्यक्त किया जाता है।

जैसे → शायद आज बारिश होगी
→ शायद आज वो मुझसे मिलने आएगी।

(8) संकेत या हेतु वाचक → इसमें किसी कार्य के होने का कारण भी व्यक्त किया जाता है।

जैसे → यदि छात्र पढेंगे तो SI में भी चयन हो जाएगा।
→ यदि बरसात अच्छी होगी तो फसल भी अच्छी होगी।

वाक्य शुद्धि

① मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ। ×
→ मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।

② तुम समाज रामायण की पुस्तक पढ़ो। ×
→ तुम रामायण पढ़ो।

③ 'शिक्षा' नामक शीर्षक निबंध अच्छा है।
→ 'शिक्षा' नामक निबंध अच्छा है।
या
'शिक्षा' शीर्षक निबंध अच्छा है।

④ कंस की हत्या श्रीकृष्ण ने किया था।
→ कंस का वध श्रीकृष्ण ने किया था।

⑤ रेडियो की उत्पत्ति किसने की।
→ रेडियो का आविष्कार किसने किया?

⑥ उन्नति के मार्ग में संकट भी आते हैं?
उन्नति के मार्ग में बाधाएँ भी आती हैं।

⑦ दही खट्टी है।
→ दही खट्टा है।

⑧ उसने मेरा गाना और घर देखा।
→ उसने मेरा गाना सुना और घर देखा।

⑨ वह सिलाई और अंग्रेजी पढ़ती है।
→ वह सिलाई सीखती है और अंग्रेजी पढ़ती है।

Date
Page

10/04/25

(10) अंग्रेजी की अपेक्षा सरल है।
अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी सरल है।

(11) वे परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं।
→ वे परस्पर मित्र हैं।

(12) एक फूल की माला लाओ।
→ फूलों की एक माला लाओ।

(13) वह यहाँ आए बिना नहीं रह सकता है।
→ वह यहाँ आए बिना नहीं रह सकता।

(14) बच्चे को काटकर सेब खिलाओ।
→ बच्चे को सेब काटकर खिलाओ।

(15) खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।
→ खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

(16) बच्चे को उबालकर दूध पिलाओ।
बच्चे को दूध उबालकर पिलाओ।

(17) बच्चे को गर्म करके दूध पिलाओ।
→ बच्चे को दूध गर्म करके पिलाओ।

(18) वह बस के साथ ही यात्रा कर रहा है।
→ वह बस से ही यात्रा कर रहा है।

(19) पंडित ने भक्तों के लिए कथा सुनाई।
→ पंडित ने भक्तों को कथा सुनाई।

classmate

Date
Page

10/04/25

(20) वह शहर का कपड़ा ला कर बेचता है।
→ वह शहर से कपड़ा लाकर बेचता है।

(21) मोहन और मोहन का पुत्र व्यस्त है।
→ मोहन और उसका पुत्र व्यस्त है।

22 खेत पर क्या बोया है।
→ खेत में क्या बोया है?

23 कुएँ में कौन पानी भर रहा है।
→ कुएँ पर कौन पानी भर रहा है?

24 हम खाना खाता हूँ।
→ हम खाना खाते हैं।

25 वे बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं।
→ वे बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं।

26// प्रत्येक छात्र को चार-चार केले दे दो।
प्रत्येक छात्र को चार केले दे दो।
या
सभी छात्रों को चार-चार केले दे दो।

27 भक्ति युग का काल स्वर्ण युग माना जाता है।
→ भक्ति काल स्वर्ण युग माना जाता है।

28 राम के वियोग में दशरथ के प्राण निकल गए।

11/04/18

→ पिताजी आ रहे हैं।
→ मुख्यमंत्री महोदय भाषण दे रहे हैं।
→ मोहन ने दर्शन कर लिए।
→ मैंने हस्ताक्षर कर दिए।
→ हालात ही कुछ ऐसे थे।

(6) श्रीमति इन्द्रा गाँधी विद्वान महिला थी।
→ श्रीमती इन्द्रा गाँधी विदूषी महिला थी।

(7) महादेवी वर्मा छायावादी कविती थी।
→ महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री थी।

(8) नमक का दारोगा नामक कहानी के रचियता प्रेमचंद्र थे।
नमक का दारोगा नामक कहानी के रचयिता " "

(9) दीपावली का त्यौहार कार्तिक मास में मनाया जाता है।
→ दीपावली का त्योहार कार्तिक मास में मनाया

(10) दीपावली पर दीप प्रज्ज्वलित हो रहे थे।
→ दीपावली पर दीप प्रज्वलित हो रहे थे।

(11) दीपावली पर घर-घर मिष्ठान्न बनाए जाते हैं।
→ दीपावली पर घर-घर मिष्टान्न बनाए जाते हैं।

(12) पूर्णिमा की ज्योत्सना दिन का सा उजाला करती है।
→ पूर्णिमा की ज्योत्स्ना दिन का सा उजाला करती है।

(13) प्रधानाध्यापक ने मेरी टी.सी. पर मोहर लगा दी।
→ प्रधानाध्यापक ने मेरी टी.सी पर मुहर लगा दी।

classmate

Date
Page

11|04|25

(14) महात्मा के सुद्धोपदेश में ही जीवन का सार होता
→ महात्मा के सदुपदेश में ही जीवन का सार होता है।

(15) चयनित शिक्षकों को पुरुस्कार वितरित किए गए।
→ चयनित शिक्षकों को पुरस्कार वितरित किए गए।

(16) मेरी बात वह हँसी से टाल गया।
→ मेरी बात वह हँसी में टाल गया।

17 प्रत्येक व्यक्तियों को शुद्ध बोलना।
→ प्रत्येक व्यक्ति को शुद्ध बोलना चाहिए।

(18) मैं शुद्ध गाय का दूध पीता हूँ।
मैं गाय का शुद्ध दूध पीता हूँ।

(19) राम से जानबूझकर गिलास टूट गया।
→ राम से अनजाने में गिलास टूट गया।

20 तुम्हारी सौन्दर्यता पर वे मोहित हो गये।
→ तुम्हारी सुन्दरता पर वे मोहित हो गये।

(21) हमारे बैल इधर-उधर भटकते हुए पड़ोसियों के खेत में जा पहुँचे।
→ इधर-उधर भटकते हुए हमारे बैल पड़ोसियों के खेतों में जा पहुँचे

(22) महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा।
→ देश सदा महात्मा गाँधी का आभारी रहेगा।

(23) पुस्तक छापने की व्यवस्था का प्रबन्ध करें।
→ पुस्तक छापने की व्यवस्था करें।

11/04/25

Date ______
Page ______

(24) राधा जल से पौधों को सींचती है।
→ राधा पौधों को सींचती है।

25 गुलामी की दासता किसे पसंद होगी।
→ गुलामी किसे पसंद होगी?

26 गले में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ी हैं।
→ पैरों में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ी हैं।

27 हिन्दी के प्रचार में अब भी बड़े-बड़े संकट हैं।
→ हिन्दी के प्रचार में अब भी बड़ी-बड़ी बाधाएँ हैं।

28 मुझे ईश्वर पर आत्मविश्वास है।
→ मुझे ईश्वर पर विश्वास है।

29 जीवन और साहित्य का घोर संबंध है।
→ जीवन और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(30) यह एक गहरी समस्या है।
→ यह एक गम्भीर समस्या है।

(31) किसी और दूसरे लड़के को भेजो।
→ किसी दूसरे लड़के को भेजो।

32 उसने अपने पांव से जूते निकाले।
→ उसने अपने पाँव से जूते उतारे।

33 इसका मूल्य नापा या तोला नहीं जा सकता।
→ इसका मूल्य आँका नहीं जा सकता।

classmate

Date
Page

11/04/25

34 यह सुनते ही उसका चेहरा गिर गया।
→ यह सुनते ही उसका चेहरा उतर गया।

35 घर से बाहर आओ तो तुम्हें मजा दिलाऊँ,
घर से बाहर आओ तो तुम्हें मजा चखाऊँ।

36 नौकरी पाने के लिए वह नाक घिसता फिरता है।
→ नौकरी पाने के लिए वह नाक रगड़ता फिरता है।

37 यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है
→

(38) बेटी पराए घर का धन होता है।
→ बेटी पराए घर का धन होती है।

(39) हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया।
→ हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दी।

(40) मैं पहुँचा ही था जबकि वह आ गया।
→ मैं पहुँचा ही था कि वह आ गया।

41 प्रत्येक प्राणी को स्वयं आत्मनिर्भर होना चाहिए।
→ प्रत्येक प्राणी को आत्मनिर्भर होना चाहिए।

42 उसकी सौंदर्यता कभी कम नहीं होगी।
उसकी सुन्दरता कभी कम नहीं होगी।

43 दूध स्वास्थ्य के लिए लाभकारक होता है।
→ दूध स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।

Date
Page

11/04/25

44 उसकी सौंदर्यता कभी कम नहीं होगी।
सुन्दरता

45 हम नवरात्रियों में व्रत करते हैं।
नवरात्र

46 अधिकांश हिन्दी के कवि अपने जीवन में निर्धन ही रहे।
→ हिन्दी के अधिकांश कवि अपने जीवन में निर्धन ही रहे।

47 मैं पटना गया तो उस समय मेरे पास केवल 20 रुपये मात्र थे।
×

48 राम राज्य में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीती थी।
पीते थे।

49. राजा दशरथ की चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए।
के

50 एक वर्ष से मैं जिस पुस्तक की रचना में संलग्न था, आज उसे छपे आकार में देखकर मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं है।
रूप

51 छायावाद के युग में राष्ट्रवादी विचारधारा के उन्नत स्वर सुनने को मिलता है।
मिलते हैं।

52 आज भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में शिष्टाचार के रूप में जाना जाता है।
माना

53 राम के धनुष भंग करते ही दूसरे राजाओं के वक्ष पर साँप लोटने लगे।
कलेजे

Classmate Date Page

14/04/15

(54) जब पृथ्वी पर पाप और अत्याचार बढ़ते हैं, तब ईश्वर कि
न किसी महापुरुषों के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेता है,
महापुरुष

(55) अपराधी और निरपराधी, का अन्तर करना कठिन है।
निरअपराध

56 दीपावली पर कुछ लोग चमचमाती चांदी के बर्तन खरीदने क
लोभ संवरण न कर सके। चमचमाते

57 चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी जगती तल में, पृथ्वी तल अं
आकाश में फैली हुई हैं है

58 महात्माओं का वैराग, भी समय के परिवर्तन की अपेक्षा
नहीं रखता। वैराग्य

59 जीवन पथ पर हमें सतत रूप से चलते रहना चाहि

(60) प्रत्येक देशवासियों, को देश की सेवा में तन, मन, धन, उ
करना देशवासी चाहिए। तन-मन-धन

(61) आंतकवाद शायद एक दिशाहीन एवं उद्देश्यहीन अन्धेरा है
जो विश्व शांति और प्रगति को निगल रहा है।

62 तुम कक्षा में आते हो, तुम्हारी पुस्तक साथ क्यों नह
तो अपनी लाते

(63) साहसी गुणी मनुष्य कहता है कि मैं विविध प्रकार के दुःख
को सहन करके भी दुःखी नहीं हूँ।

Date ______
Page ______

T.B.B.

64 फूल में सुगंध होती है, और तितली के (पास) सुंदर पंख।

(65) स्त्री का हृदय गुलाब की पंखुड़ियों की तरह अत्यन्त कोमल एवं संवेदनशील होता है।

66 जब तक तुम अपने (अपना) अभिप्राय का अभिप्रेत, स्पष्ट रूप से नहीं कहते, (तब तक) मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूँगा।

67 मैं आज सुबह आपके घर गया था किंतु (तुम) (आप) घर पर नहीं मिले।

68 प्रत्येक देशवासी को विभिन्नता में एकीकरण (एकता) करने की शक्ति को उजागर करने वाले तत्वों की पहचान करनी चाहिए

69 रेखा ने अमित को आवाज लगाकर कहा कि राहुल (को) (के लिए) दूध रसोई में गैस के ऊपर रखा है।

70 तुष्टीकरण (करने) की नीति अपनाकर न व्यक्ति आगे बढ़ सकता है और न राष्ट्र।

71 गम्भीर (गहरी), नदियों, विस्तृत सागरों एवं उत्तुंग पर्वत शृंगों (का) (को) पार करना भी अब कठिन नहीं रहा।

72 अध्यापक ने आज [हमारे को] (हमें) नया पाठ पढ़ाया।

73. मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आपके द्वारा इतने परिश्रम से कमाया गया यह धन आखिर किस काम (में) आएगा।?

Date 15/04/25
Page

74 झगड़ों के कारण नगर की अधिकतर दुकानें आज भी बंद रहीं।
अधिकांश

75. बुरे
(बुरा) से बुरा आदमी भी सम्मान चाहता है।

76. आपकी
आपके इन्हीं गुणों के कारण ही तो लोग तुम्हारे यशो का वर्णन करते अघाते हैं नहीं।

77. यहाँ
इधर आजकल मौसम की वर्षा हो रही है।

78 जिस व्यक्ति की आत्मा जितनी विशाल है, वह उतना ही (बड़ा) महापुरुष है।

79 पतिव्रता नारी ने इस रहस्य को अपने हृदय के भीतर ही अन्तर्निहित रखा।
में

(80) सेठजी (बड़े) सज्जन (पुरुष) हैं।

(81) निकला
मैं सुबह घर से निकल पड़ा और पैदल ही अपने दोस्त के गाँव में पहुँच गया।

82 राजेन्द्र प्रसाद जी ने (अपनी) आत्मकथा में स्वातंत्र्य संघर्ष का जीवन्त अंकन किया।

83 होने
हड़ताल के प्रस्फुटन से व्यापारिक संस्था बंद होने की आशंका की जा रही है।

84 जाती
जिस प्रकार आभूषणों के द्वारा शरीर की शोभा बढ़ जाती उसी प्रकार अलंकारों से भाषा में लालित्य आ जाता है।

Date 15/04/25

85 शीर्षक को चयन करते समय अनुच्छेद में निहित भावों और विचारों की परख कर लेनी चाहिए। [का]

86 बड़ों की बातों को आदर से सुनना चाहिए। [पूर्वक]

87 अरुणाचल प्रदेश में प्रातः काले समय का दृश्य अत्यंत मनोरम होता है। [काल]

88 सीता राम की अक्षा आज्ञाकारी पत्नी थी। [आज्ञाकारिणी]

89 तुमने अपनी स्वेच्छा से यह काम किया है।

90 व्यक्ति के हर प्रकार के कष्टों को वह पलभर में दूर करती है। [कष्ट]

91 कारगिल युद्ध में सेना वीरता के साथ लड़े लड़ी।

92 जब वह मेरे घर आई तो आठ बजा था। [तब] [बजे थे]

93 मेरी समझ में अभी तक यही नहीं आया कि इस बात का मेरे से क्या सम्बंध है? [मुझ]

94 मैं कुछ का कुछ लिखा लिख दिया। [मैंने]

95 मीठे वचन बोलना उत्तम गुण है।

CLASSMATE
Date
Page

15/04/25

96 उसकी आँखों से आँसू बहते हैं।

97 जो मनुष्य राष्ट्र-प्रेमी होता है उसको देश की एक-
वस्तु से प्यार हो जाता है। प्रत्ये

98 समय का सदुपयोग द्वारा मनुष्य देवता बन जाता है।
के

97 गाँधीजी पक्के ईश्वर के भक्त थे।

98 शीर्षक को छोटा, आकर्षक और विषय से सम्बंध रखना चा
सम्बंधित होना

99 सांस्कृतिक जागृति के पीछे राष्ट्रीय जागृति आती
बाद

100 संसार के प्रत्येक कोने-कोने में अनगिनत भाषाएँ
बोली जाती हैं।

101 काव्य की शोभा अथवा चमत्कार कभी शब्दों में होता
है और कभी अर्थों में।
अर्थ

102 कृपया आप ही यह बताने की कृपा करें कि दिल्ली क
चलना है?

103 विद्यार्थियों ने प्राचार्य को एक गेंदे की माला पह
गेंदे की एक

104 जो नारी अपने काम काज को अपने बच्चों से अधिक
महत्वकांक्षी मानती है, उसे विवाह नहीं करना चाहिए।
महत्वपूर्ण

Date
Page

15/04/25

105 उनका परिचय कराते समय मैंने कहा कि वे बहुत ही ~~कि~~ निकट के/आत्मीय रिश्तेदार हैं।

106 राम ने अपनी गलती के लिए क्षमा की (भीख) माँगी।

107 धनवान को व्यर्थ/बेकार में सहायता देकर कोई लाभ न होगा।

भागा
108 सच्चा वीर वह है जो कभी युद्ध से पीठ दिखाकर (दौड़) नहीं जाता, बल्कि शत्रु का डटकर सामना करता है।

108 महात्मा गाँधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों की अनेक बार विश्व के गणमान्य नेताओं ने प्रशंसा की।
गण्यमान्य

109 यह निस्संदेह (पूर्वक) कहा जा सकता है कि आत्मकथा लिखना जीवनी लिखने से भी कठिन काम है।

110 आजकल भारत के कारखानों से एकसे एकबढ़कर श्रेष्ठतम वस्तुएँ बनकर निकल रही हैं। एकसे बढ़कर एक

(111) हमें पहले प्राथमिकताएँ तय कर लेनी चाहिए (प्रत्युत) अपार धनराशि का व्यय निरर्थक प्रमाणित होगा।
अन्यथा

दुर्लभ
112 इस (सुलभ) मनुष्य जन्म को पाकर जो जीवन में आत्मोन्नति के लिए प्रयास नहीं करता, उसका जन्म लेना ही व्यर्थ है।

CLASSMATE

Date

Page

15/05/25

113 यह एक पुरानी सामाजिक मान्यता और मानसिकता की नारी है जो अपने पैरों पर खड़ी होकर स्वावलम्बी बनाने में असमर्थ है।
होने में

114 भिखारी की दशा से मुझे दया आ गई।
पर

115 संस्मरण रहे लेखक अपने संस्मरणों में बिस्मरणीय क्षणों एवं घटनाओं का लेखा-जोखा अंकित करता है।
अ

116 घर के प्रत्येक सदस्यों से यह अपेक्षित है कि वे सद्भावना से रहें।
सदस्य

117 यह जरूरी नहीं है कि गरीब घर में पैदा होने वाला बालक आजन्म पर्यन्त गरीब ही रहे।
जीवन पर्यन्त

118 डॉक्टर के कहने पर मैंने शाम सुबह लम्बी सैर पर जाना शुरू कर दिया।

119 क्षमा कीजिए मैं कल नहीं आ पाऊँगा क्योंकि मैंने पटना जाना है।
मुझे

26|04|-20 (26) Date J.B.B

[विराम चिह्न]

* विराम का अर्थ है - रुकना, विश्राम या ठहराव भाषा में जब हम अपने भावों को प्रकट करते हैं तो अपने विचारों को उचित प्रकार से व्यक्त करने के लिए हम कहीं-कहीं कुछ रुकते हैं। इसे ही विराम कहते हैं। इन रुकने के स्थानों को कुछ चिह्नों द्वारा दिखाया जाता है, जिन्हें विराम चिह्न कहते हैं। विराम चिह्नों का प्रयोग अत्यावश्यक है। इनके प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होती है।

→ हिन्दी भाषा में निम्नलिखित विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

विराम	चिह्न
अल्प विराम (Comma)	,
अर्द्ध विराम (Semi colon)	;
पूर्ण विराम (Full stop)	।
प्रश्नवाचक चिह्न	?
विस्मयादि बोधक चिह्न	!
निर्देशक चिह्न	—
योजक चिह्न	-
कोष्ठक चिह्न	( )
उद्धरण चिह्न	" "
लाघव चिह्न	0 (राज. उ० मा०)
त्रुटि बोधक चिह्न	^
अपूर्ण विराम	:
विवरण चिह्न	:-
तुल्यता सूचक	=
स्थान पूरक (रिक्त स्थान)	....

28|04|20

J.B.B.

① * अल्पविराम (,) : पढ़ते समय जिस स्थान पर बहुत थोड़ी देर ठहरना हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग प्रायः नीचे लिखे स्थानों पर होता है।

→ जब एक ही तरह के कई शब्द अथवा वाक्यांश साथ-साथ आ जाएँ और उनके बीच कोई योजक न हो।

जैसे → राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चार भाई थे।

→ आज हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, पंजाबी, आदि भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

→ जहाँ 'यह' का लोप हो, जैसे → कब तक आयेगा, कहा नहीं जा सकता।

→ पत्र में सम्बोधन के बाद, जैसे – महोदय, पूज्यपिताजी,

→ किसी वाक्य को उद्धृत करते समय उससे पहले अल्प विराम लगता है।

जैसे → सुभाष चन्द्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

② अर्द्धविराम (;) जहाँ अल्प विराम से अधिक लेकिन पूर्णविराम से कम ठहरना हो।
जैसे → सूर्य उदय हुआ, बच्चे विद्यालय की तैयारी करने लगे ; हम अपने काम पर गए।

J.B.B

Date 28/04/25
Page

J.B.B

→ जब तक भारत के लोग भूखे और नंगे, बेकार और अशिक्षित, अंधविश्वासी और मूर्ख रहेंगे; कितनी भी योजनाएँ बने, उन्नति नहीं कर सकेंगे

(2) पूर्ण विराम (।): जहाँ वाक्य पूरा होता है, वहाँ पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। विस्मयादिबोधक और प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता है। जैसे:-
→ प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य करे।
→ यह कपड़ा टिकाऊ है।
→ नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

(3) प्रश्न चिह्न (?) इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में होता है।
जैसे → क्या तुम विद्यालय जा रहे हो ?

(4) विस्मय सूचक चिह्न (!) विस्मय (आश्चर्य), हर्ष शोक, घृणा आदि भावों को प्रकट करने के लिए जो शब्द आते हैं, उनके आगे यह चिह्न लगाया जाता है जैसे :-
→ वाह! तुम तो बड़े बहादुर निकले।
→ शाबाश बेटा! मुझे तुमसे यही आशा थी।

(5) निर्देशक चिह्न (—): इसका प्रयोग प्रायः निर्देश के लिए होता है। जैसे → पशुपक्षी—गाय, भैंस, चिड़िया, कौवा, तोता सभी व्याकुल थे। वार्तालाप में वक्ता के आगे यह चिह्न प्रयुक्त होता
जैसे:→ राम ने कहा—मुझे तुम से यह उम्मीद नहीं थी।

J.B.D.

Date ____
Page ____

(6) योजक चिह्न (-):
इसका प्रयोग प्राय: समस्त या युग्म शब्दों के बीच लगाया जाता है।
जैसे → देश-भक्त, सुख-दुख, विद्या-मंदिर, विश्व-शान्ति

(7) कोष्ठक चिह्न ({ [ ] }) :→ किसी पद का अर्थ प्रकट करने के लिए अथवा नाटकों में पात्र के भाव व्यक्त करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे → मुसलमान एक मास तक रोजा (व्रत) रखते हैं।
→ निरन्तर (लगातार) वर्षा होती जा रही है।

8 उद्धरण चिह्न (" ") :- उद्धरण चिह्न का प्रयोग पुस्तक, कवि या लेखक के नाम में, इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग करते हैं।
जैसे → 'काव्यप्रकाश', रामधारी सिंह 'दिनकर'।

→ जब किसी वक्ता या लेखक के कथन को ज्यों का त्यों ~~उद्~~ उद्धृत कर दिया जाता है तब दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे → नेताजी ने कहा, " तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

(9) लाघव चिह्न (०) - यदि शब्द का संक्षिप्त रूप लिखना हो तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे → पं० रवि शंकर प्रसिद्ध सितारवादक हैं।
→ रा० उ० मा० वि०

Date 28|04|25
Page

(10) त्रुटिबोधक चिह्न (^) :- वाक्य में किसी छूटे हुए शब्द को सूचित करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसे हंस पद भी कहा जाता है।

→ अंग्रेजी की अपेक्षा ^(हिन्दी) सरल है।

(11) अपूर्ण विराम (:) किसी भी संबंधित विषय या शीर्षक के एक भाग को अलग से स्पष्ट सूचित करने के लिए प्रायः इस चिह्न का प्रयोग होता है - जैसे :-
(1) प्रेमचन्द्र : एक अध्ययन (2) नई कहानी : कुछ प्रश्न

12 विवरण चिह्न → अपूर्ण विराम तथा विवरण चिह्न का प्रयोग प्रायः 'निर्देशक चिह्न' के स्थान पर किया जाता है। विशेष रूप से परिभाषा, लक्षण भेद अथवा उदाहरण के प्रसंग में इसी चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे → समास के भेद :-
छंद की परिभाषा :
विशेष सूचना :- अंलकार का उदाहरण :-

13. तुल्यतासूचक (=) इसे 'समानता सूचक' भी कहा जाता है। यह चिह्न सबसे अधिक गणित में प्रयुक्त होता है। शब्दार्थ अथवा गणित की तुल्यता सूचित करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है,
जैसे → जलज = कमल
रवि = सूर्य
1 रुपया = 100 पैसे

J.B.B.

classmate
Date 28/04/25
Page

14 स्थान पूरक चिह्न (....) :- इस चिह्न का प्रयोग निम्नांकित उद्देश्य से किया जाता है -
→ वाक्य में छोड़े गए अंश के लिए
→ अरे मोहन! तुम यहाँ अभी तक------

* रिक्त स्थान दिखाने हेतु जैसे :-
जो जन्म लेता है, उसकी भी ---- निश्चित है।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ लोक जीवन के दीर्घकालीन अनुभव का समृद्ध कोश होती हैं। लोकोक्तियों मे लोक जीवन के विविध अनुभव समाहित होते हैं। इसलिए वे बहुत विस्तृत तथ्य और सत्य को कम से कम शब्दों मे प्रभावोत्पादक ढंग से सहज ही व्यक्त कर देती हैं। वे कथन जो जनजीवन मे (लोकजीवन मे) दीर्घकालीन अनुभव के उपरान्त किसी विशिष्ट अर्थ और परिस्थिति मे प्रयुक्त होने लगते हैं उन्हें कहावत या लोकोक्ति कहते हैं।

लोक + उक्ति

लोकोक्ति और मुहावरों मे समानता और अन्तर

समानता → मुहावरों की भाँति कहावते भी भाषा को रोचक व प्रभावोत्पादक बनाती हैं।

II) मुहावरे व कहावते दोनो ही भाषा को रोचक व प्रभावोत्पादक बनाती हैं। साधारण अर्थ से भिन्न विलक्षण अर्थ का बोध कराते हैं।

असमानता → (I) लोकोक्ति वाक्य है, जबकि मुहावरा वाक्यांश है।

II) लोकोक्ति अपने अर्थ मे पूर्ण होती है, जबकि मुहावरे अपने अर्थ में पूर्ण नही होते हैं।

III) लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य मे ज्यों का त्यों किया जाता है जबकि मुहावरे मे प्रयोग के आधार पर लिंग, वचन और क्रिया के अनुरूप परिवर्तन आ सकता है

(IV) लोकोक्ति लोक की उपज है जबकि मुहावरे भाषा की, साहित्य की उपज हैं।

J.B.B.

Date 18/04/21
Page

लोकोक्तियाँ → अर्थ

(1) अन्धा क्या चाहे दो आँखे → बिना प्रयास इच्छित वस्तु मिलना।

2) अंधा बाँटे रेवड़ी (शीरनी), फिर-फिर अपने को दे → अनुदान व्यक्ति अपनो को ही लाभ पहुँचाता है।

3) अन्धी पीसे कुत्ता खाय → परिश्रम कोई करे, लाभ कोई और पाए।

4) अक्ल बड़ी की भैंस → शारीरिक बल से बौद्धिक बल श्रेष्ठ होता है।

5) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता → अकेला व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता।

6) अकेली मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। → एक दुष्ट व्यक्ति पूरे वातावरण को दूषित कर देता है।

7) अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है - अपने घर में कायर भी वीरता दिखाता है।

8) अपना हाथ जगन्नाथ → स्वयं का कार्य स्वयं करने पर ही सफलता मिलती है।

9) अपनी पगड़ी अपने हाथ में → अपना सम्मान स्वयं के ही हाथ में होता है।

10) अपनी जूती/मोगरी अपने ही सिर → स्वयं द्वारा निर्मित दण्ड से स्वयं दण्डित होना।

11) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत → काम बिगड़ने पर पछताने से कोई लाभ नहीं होता।

Date 19/04/25
Page

12. अरहर की टट्टी गुजराती ताला → सामान्य वस्तु पर विशेष रखवाली।

13 अशर्फियाँ लुटें कोयलों पर मुहर → एक ओर फिजूल खर्ची दूसरी तरफ रोक।

14 आसमान से गिरा खजूर में अटका → एक मुसीबत से बचकर दूसरी में फँसना।

15 इमली के पत्ते पर दण्ड पेलना → किसी के बल भरोसे पर निश्चित रहना।

16) एक अनार सौ बीमार → वस्तु कम आवश्यकता अधिक।

17) एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा → दोष पर दोष होना।

18) ककड़ी चोर और फाँसी की सजा → साधारण अपराध और कठोर सजा।

19 कबहुँ निरामिष होय न कागा → दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता।

20) करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े → भाग्य साथ न देने पर व्यक्ति को दुख ही दुख सहने पड़ते हैं।

21 काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती → कपट पूर्ण आचरण हर बार सफल नहीं होता है।

22) कानी के ब्याह में सौ-सौ जोखों → किसी कमी के कारण बार-बार बाधा आना।

23) का बरषा जब कृषि सुखाने → समय बीत जाने पर सहायता व्यर्थ है।

24 कोउ नृप होय हमें क्या हानि → उदासीनता

25. कोयलों की दलाली में हाथ काले / मुँह काला
→ बुरे कार्य का साथ देने पर बुरे ही परिणाम मिलते हैं।

26 खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है → संगत का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

27 गधा क्या जाने गुलकंद का स्वाद → मूर्ख व्यक्ति गुणवान वस्तु का उपयोग नहीं जानता है।

28 घर आया नाग न पूजहिं, बाँबी पूजन जाहिं → सु।
अवसर का लाभ न उठाकर बाद में उसकी प्राप्ति के प्रयास करना।

29 घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध → अपने स्थान पर गुणवान व्यक्ति का भी सम्मान नहीं होता

30) घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या →
श्रम का पारिश्रमिक नहीं मिले तो जीवन व्यर्थ है।

31 चन्दन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ →
गुणवान वस्तु कम ही अच्छी, निरर्थक अधिक भी बेकार।

32 चौबे जी गए छब्बेजी बनने, दुब्बेजी रह गए →
लाभ प्राप्ति की आशा में हानि होना।

Date
Page

19/04/25

33 छछूंदर के सिर में चमेली का तेल → अयोग्य व्यक्ति का बड़ा सम्मान।

34 जिस थाली में खाए उसी में छेद करे → हित करने वाले का अहित करना।

35 जैसी तेरी खूबरी वैसे मेरे गीत → सामने वाले व्यक्ति के व्यवहार के अनुसार कार्य करना।

36 जो गरजते है वो बरसते नहीं → बोलने वाले काम नहीं करते है।

37 तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर → सामर्थ्य के अनुसार ही व्यक्ति को काम करना चाहिए।

38 थोड़ी पूँजी धनी को खाय → अपर्याप्त धन से किया गया कार्य हानि ही पहुँचाता है।

39 दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते → मुफ्त में मिली वस्तु के गुण दोष नहीं देखे जाते हैं।

40 नमाज छोड़ने गए, रोजे गले पड़ गए → लाभ के स्थान पर हानि होना।

41 नाम बड़े दर्शन छोड़े → थोड़ी शान

42 नौ दिन चले अढाई कोस → बहुत धीमी गति से कार्य करना।

43 पूत के पाँव तो पालने में ही दिख जाते हैं → योग्यजनों के लक्षण तो बचपन में ही नजर आ जाते हैं।

J.18.15

19|04|28

44. फिसल पड़े तो हर-हर गंगा → असफलता को बहाने बनाकर दिखाना।

45 बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद → मूर्ख व्यक्ति गुणकारी वस्तु का उपयोग नहीं जानता है।

46 पेड़ पर अब कोई नहीं छोड़ता → कमजोर का सभी शोषण करते है।

47 मन-मन भावे मूँड हिलावें → इच्छा होने पर भी मना करना।

48 मुँह में आया पताशा किसी को बुरा नहीं लगता → अनायास प्राप्त वस्तु किसी को बुरी नहीं लगती।

49 हजारो टाँकिया सहकर | हथौड़े खाकर महादेव बनते है। कष्ट सहकर ही यश मिलता है।

50 हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते है → अन्दर बाहर के व्यक्तित्व और कृतित्व में अन्तर होता है।

51 होनहार बिरवान के होत चीकने पात → योग्य जनों के लक्षण बचपन में ही नजर आ जाते है।

(27)

11/04/25

मुहावरे

जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, उसे मुहावरा कहते हैं।

(1) इनका शाब्दिक अर्थ नहीं अपितु सांकेतिक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है।

(11) मुहावरें वाक्यांश होते हैं। ये न तो एक या दो शब्द होते हैं, न पूरा वाक्य बल्कि वाक्यांश होते हैं।

→ मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों के ~~आधार~~ स्थान पर उनके पर्यायवाची या समानार्थक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। जैसे → पानी-पानी होना के बदले नीर-नीर होना प्रयोग गलत है।

(5) उनका अक्षरश: अनुवाद दूसरी भाषा में नहीं किया जा सकत

1) खून का प्यासा होना → जान लेने पर उतारू होना।
→ धन दौलत के लिए भाई-भाई भी खून के प्यासे हो जाते हैं

2) छठी का दूध याद आना → भारी संकट में पड़ना।
→ मैं तुम्हे ऐसा पीटूंगी की तुम्हे छठी का दूध याद आ जाएगा ।।

3) आपे से बाहर होना → गुस्सा होना।
→ परिक्षा में मोहित के कम अंक देखकर पिता जी आपे से बाहर हो गए।

4) ढाक के तीन पात → कभी कोई विशेषता न होना।
→ अनपढ़ को समझाना व्यर्थ है क्योंकि वह तो ढाक के तीन पात है।

J.B.B.

Date ____
Page ____

21/04/25

5) कञ्चन बरसना → लाभ ही लाभ प्र होना।
→ इस बार बरसात क्या हुई, खूब कंचन बरसा है।

6) कोरा जवाब देना → साफ-साफ मना कर देना।
→ मैंने जब अतुल से अपनी पुस्तक मांगी तो उसने कोरा जवाब दे दिया।

7) पगड़ी उतारना → अपमान करना →
→ दूसरों की पगड़ी उतारने वालों को अन्त में पछताना पड़ता है।

8) आड़े हाथों लेना → खरी-खरी सुनाना।
→ रमेश के घर देरी से पहुँचने पर उसके पिताजी ने उसे आड़े हाथों ले लिया।

9) घोड़े बेचकर सोना → गहरी नींद में सोना।
परीक्षा देने के बाद विद्यार्थी घोड़े बेचकर सोते हैं।

10) आस्तीन का साँप → कपटी मित्र
तुमने जिसको नौकरी दिलाई है वही तुम्हारे लिए आस्तीन का साँप बना हुआ है। हर जगह तुम्हारी निंदा करता है।

11) घाव पर नमक छिड़कना → दुःखी को और दुःखी करने वाली बात करना।
→ परीक्षा में फेल हो जाने पर श्याम पहले ही दुःखी है, तुम उल्टी बातें करके क्यों उसके घावों पर नमक छिड़क रहे हो।

12 नाक में दम करना → बहुत परेशान करना।
→ शिवाजी ने युद्धों में मुगलों की नाक में दम कर दिया।

J.B.B.

Date ______
Page ______

(13) थाली का बैंगन → सिद्धान्तहीन व्यक्ति।
→ आजकल के MLA थाली के बैंगन हैं। जिधर मंत्री पद मिलेगा उधर ही भागेंगे।

14) एक आँख से देखना → समान दृष्टि से देखना।
→ भारतीय जन सब धर्मों को एक दृष्टि/आँख से देखते हैं।

15 एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। → समान व्यवहार वाले
→ यहाँ किस पर विश्वास किया जाए, छोटे-बड़े सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं।

16 चिराग लेकर ढूँढना → कठिनाई से मिलना
→ रोहन जैसा आज्ञाकारी पुत्र तो चिराग लेकर ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा।

17 जान के लाले पड़ना → मुसीबत में फँसना
→ विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से यात्रियों की जान के लाले पड़ गए।

(18) चुल्लू भर पानी में डूब मरना → शर्म महसूस करना।
→ बाप बेचारा मेहनत से कमाकर लाता है और तुम शराब पी रहे हो. जाओ चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

(19) कान कतरना → बढ़-चढ़कर काम कर जाना →
आजकल के बच्चों को आप कम न समझिए, वे बड़े बड़ों के कान कतरते हैं।

(20) कीचड़ उछालना → दूसरों का अपमान करना।
→ चुनाव में एक पार्टी दूसरी पार्टी पर कीचड़ उछालती है।

21/04/25

21) कलेजे पर साँप लेटना → ईर्ष्या से जलना।
→ जब मुझे अपने विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया तो सभी के कलेजे पर साँप लोटने लगा।

22) राई का पहाड़ बनाना → छोटी सी बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना।
→ जरा सी बात थी परंतु इसने तो इतना बढ़ा-चढ़ा कर कहा कि राई का पहाड़ बना दिया।

23 दम में दम आना → शान्ति प्राप्त होना।
→ जब उसका पुत्र खतरे से बचकर आ गया तभी माता के दम में दम आया।

24) खरी-खरी सुनाना → सच्ची-सच्ची कह देना।
जब मैंने उसे सबके सामने खरी-खरी सुनाई तो वह शर्म के मारे बोल न सका।

25) आँखों में मेघमाला गिर आना – आँखों में आँसू आ जाना।
→ आरुषि बहुत संवेदनशील है, सिनेमा में भी नायिकाओं को रोते देखकर उसकी आँखों में मेघमाला गिर आती है।

26 गागर में सागर भरना → कम शब्दों में बहुत अधिक कह देना।
→ बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया।

27 अग्नि में घी का काम करना → गुस्से को और अधिक भड़काना।
मेरे देर से आने के कारण पिताजी वैसे ही गुस्से में थे, माँ ने शिकायत कर अग्नि में घी का काम कर दिया।

Date
Page
21/04/25

(28) पौ बारह होना → खूब मौज होना।
→ जबसे तुम डिप्टी कमिश्नर के पद पर लगे हो तब से तुम्हारे पौ बारह हो गए।

(29) घर फूँक तमाशा देखना → अपना नुकसान करके मस्ती में रहना
→ रामू तो उन लोगों में से है जो घर फूँक कर तमाशा देखते हैं।

(30) घर में गंगा बहाना → सुविधा करना | होना
→ सोमेश तुम्हे ट्यूशन लगाने की भला क्या आवश्यकता है। तुम्हारे तो घर में ही गंगा बहती है क्योंकि तुम्हारे पिताजी M.A. है।

(31) दाँत काटी रोटी होना → घनिष्ठ मित्रता होना
→ अजी, राम और श्याम की क्या पूछते हो ? उनकी तो आपस में दाँत काटी रोटी है।

32. छाती पर साँप लेटना → बहुत ईर्ष्या होना
→ अपनी श्रेणी में जुनैद को प्रथम आते देख मेरी छाती पर साँप लेटने लगा।

(33) छाती पर पत्थर रखना → चुपचाप मुसीबत सहन करना
उमा ने तो उसी दिन से छाती पर पत्थर रख लिया था, जिस दिन उसका पति दूसरी शादी करके आया था।

(34) कलम तोड़ना → लिखने में कमाल करना
→ बिहारी ने इतने अच्छे दोहे लिखकर तो कलम ही तोड़ दी

(35) टस से मस न होना → तनिक भी प्रभावित न होना।
→ क्रूर व्यक्ति करुण से करुण परिस्थितियों में भी टस से मस नहीं होता।

Date
Page

21/04/20

(36) हाथ पाँव फूलना → घबरा जाना।
→ घर मे चोरो को घुसते देख उसके हाथ पाँव फूल गए।

37 भंडा फोड़ना → भेद खोलना
→ उसे अपने मन की बात मत बताओ, नहीं तो वह सब बातों का भंडा फोड़ कर किए कराए पर पानी फेर देगा।

38 अंग-अंग ढीला होना → बहुत अधिक थक जाना
कड़ी मेहनत करने से किसान का अंग-अंग ढीला हो जाता है।

39 थूककर चाटना → वचन से फिर जाना
→ रामदास ने कहा 'नवंबर तक मैं तुम्हारी एक-एक पाई चुका दूँगा। मैं थूककर चाटना नहीं जानता।

(40) दम मारने की भी फुरसत न होना → थोड़ा भी समय न होना।
काम बहुत अधिक है, इसलिए दम मारने की भी फुरसत नहीं है।

(41) बात का धनी होना → वायदों का पक्का होना।
गुर्जर सदैव अपनी बात के धनी होते है।

42 दाँतों तले उँगली दबाना → चकित रह जाना।
→ झाँसी की रानी की वीरता सुनकर विदेशी भी दाँतों तले उँगली दबा लेते है।

(43) लहू का घूट पीकर रह जाना → विवशता के कारण क्रोध दबा लेना।
→ तुम्हारे अपमानजनक शब्द सुनकर उस समय सबके सामने तो मैं लहू का घूंट पीकर रह गया, परन्तु आगे फिर कभी ऐसा किया तो तुम्हें मारे बिना नहीं छोड़ूंगा।

Date
Page
21/04/24

44) दो नावों पर सवार होना → कहीं का न होना -
जो लोग परस्पर विरोधी दलों का सहारा लेते हैं
वे मानो दो नावों पर सवार होते हैं।

45) निन्यानवे के फेर में पड़ना → धन के लोभ में फँसना
→ निन्यानवे के फेरे में न पड़ने से ही मनुष्य चिंता से
बचा रहता है।

46 सिर पर पाँव रखकर भागना → घबराकर बहुत तेज भाग
→ पुलिस के आते ही डाकू सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हु

47 नाक पर मक्खी न बैठने देना → अपने पर कोई आ
न लगने देना।
सतीश इस बदनामी वाले काम में बिल्कुल साथ नहीं दे
वह नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देता।

48) हवा के घोड़े पर सवार होना → शीघ्रता करना
→ तुम तो हवा के घोड़े पर सवार होकर आए हो, ज़रा
ठहरो, अभी तुम्हारा काम करता हूँ।

49) छत्र-छाया में रहना → किसी के आश्रय में रहना।
→ वट वृक्ष की छत्र-छाया में लताएँ फलने-फूलने ल

50) छाती पर मूँग दलना → जानबूझ कर कष्ट देना।
→ पिता ने नालायक पुत्र को घर से निकाल दिया, फिर भ
वह उसी मोहल्ले में रहकर उनकी छाती पर मूँग
दल रहा है।

(51) विष उगलना → कटु वचन बोलना
→ आजकल पाकिस्तान भारत के खिलाफ बहुत विष
उगल रहा है।

J.B.B

21/04/25

(52) पेट मे चूहे कूदना → भूख लगना।
अरे भैया, पहले मुझे खाना खा लेने दो, मेरे पेट मे तो चूहे कूद रहे है।

(53) पैरो तले से जमीन निकल जाना → होश उड़ जाना।
→ अपने घर में आग लगने की खबर सुनकर उसके पैरो तले से जमीन खिसक गई।

(54) बल्लियाँ उछालना → बहुत प्रसन्नता प्रकट करना
→ ज्योंही उसे पुरस्कार मिलने का समाचार मिला वह बल्लियाँ उछालने लगा।

(55) बात का बतंगड़ बना डालना → छोटी सी बात को बढ़ा देना
→ बात कुछ भी नहीं थी कि योगेश ने बात को अधिकारियों तक पहुँचाकर बात का बतंगड़ बना दिया।

56. त्राहि-त्राहि मचना → कष्ट से परेशान होना।
→ अकाल के कारण समस्त प्रजा में त्राहि-त्राहि मच गई।

57) मिट्टी का माधो → बहुत ही मूर्ख
→ तुम तो व्यर्थ में उसे समझाकर अपना समय नष्ट कर रहे हो वह तो मिट्टी का माधो है।

58. सिर आँखो पर बैठना → बहुत सम्मान करना
→ आप हमारे गुरु हैं, आपको सिर आँखो पर बिठाना हमारा कर्तव्य है।

59) हाथ साफ कर जाना → चुरा लेना
→ सिपाही के मुँह फेरते ही जेबकतरा हाथ साफ कर गया।

मानक पारिभाषिक शब्दावली

Quaturly	त्रैमासिक
Rank	श्रेणी
Refute	खंडन करना
Rebate	छूट
Sanction	स्वीकृति
Unique	अनुपम, अपूर्व
Temporary	अस्थायी
Undersirable	अवांछनीय
Warrant	अधिपत्र
X-Ray	एक्स रे
Year book	अब्द कोश
Vacancy	रिक्त, खाली जगह
Valid	वैद्य, विधिमान्य
Wait	प्रतीक्षा
Waiting list	प्रतीक्षा सूची

J.B.B.

02/05/25

Yard राज, बाड़ा

Zenith चरम सीमा

Zone अंचल, कटिबंध

Zonal आँचलिक

Layout योजना

Ignore नजर अंदाज

Office Copy कार्यालय प्रति

Paramount सर्वोपरि